

25 वां अंक (अक्टूबर-मार्च)



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सुराभ



कार्यालय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - I) ओडिशा, भुवनेश्वर
महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II) ओडिशा, भुवनेश्वर



संदेश



श्री राज कुमार

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)

कार्यालय की हिंदी पत्रिका "सुरभि" के 25 वें अंक का प्रकाशन अत्यधिक प्रसन्नता और गर्व का विषय है। पूर्व अंक की भांति इस अंक में भी कार्यालय के कार्मिकों द्वारा पत्रिका के प्रकाशन में उनकी रचनाओं के रूप में सराहनीय योगदान दिया गया है। सभी रचनाकारों द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखे गए लेख एवं कविताएं उनकी राजभाषा हिंदी के ज्ञान एवं हिंदी में उनकी रुचि को दर्शाते हैं।

विभागीय हिंदी पत्रिकाओं का उद्देश्य कार्यालय के कामकाज में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग की प्रवृत्ति को विकसित करना है। हिंदी पत्रिका "सुरभि" ने इस उद्देश्य को फलीभूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग राजभाषा के रूप में होता है किंतु ये जीवंत साहित्यिक भाषा भी है। इसका प्रमाण यह है कि इस कार्यालय के कार्मिक इस भाषा को न केवल कार्यालयीन कार्य में प्रयोग कर रहे हैं अपितु अपनी रचनाओं के माध्यम से अपनी आंतरिक भावनाएं एवं सोच को भी प्रकट कर रहे हैं।

आशा है कि हिंदी पत्रिका "सुरभि" का नूतन अंक राजभाषा हिंदी के उन्नयन में सहायक होने के साथ-साथ कार्यालय में हिंदी के प्रयोग के प्रति एक सकारात्मक सोच को भी विकसित करेगा एवं "सुरभि" कार्यालय के कार्मिकों की लेखन प्रतिभा, कलात्मकता, रचनात्मकता को उभारने में सदैव अपना योगदान देती रहेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएं।

(राज कुमार)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I),

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश



श्री अतुल प्रकाश

महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I I)

यह अत्यंत गर्व एवं हर्ष का विषय है कि राजभाषा हिंदी के प्रति सम्मान के रूप में अर्ध- वार्षिक गृह पत्रिका सुरभि के 25वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा के प्रचार- प्रसार के लिए पत्रिका एक सशक्त माध्यम है और हिंदी पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रति हमारा समर्पण दर्शाता है।

कार्यालय के कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों के द्वारा स्वरचित रचनाएँ जिसमें उन्होंने अपने अनुभव, स्मृति एवं विचारों को स्याही में भिगोया है। साथ ही यह और अधिक प्रसन्नता का विषय है कि विविध भाषी होने के बावजूद अपने मनोभावों को रचनाओं के माध्यम से राजभाषा हिंदी में उकेरने का सुन्दर प्रयास किया है जो कि विविधता में एकता के कथन को सार्थक बनाता है।

पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकार एवं पत्रिका के प्रकाशन में सहायता करने वाले सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं देता हूँ।

अतुल प्रकाश

(अतुल प्रकाश)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I I)

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश



श्रीमती राधिका सुरेश

उप महालेखाकार

ले.प.प्र.स-II, पुरी

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारी हिंदी ई-पत्रिका "सुरभि" अपने 25वें अंक के प्रकाशन के साथ एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि की ओर अग्रसर हो रही है। यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यालय के कार्मिकों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनी है बल्कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

हिंदी केवल एक भाषा नहीं बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान की वाहक है। "सुरभि" के माध्यम से हम साहित्य, कला, विचार और अभिव्यक्ति के विविध रूपों को एक मंच देने का प्रयास कर रहे हैं जिससे हिंदी भाषा की समृद्धि और व्यापकता का प्रसार हो सके। इस अंक में प्रकाशित लेख, कविताएं, विचारशील आलेख और अन्य रचनाएँ निश्चित रूप से पाठकों को प्रेरित करेंगी और ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होंगी।

मैं इस अवसर पर संपादकीय टीम, सभी लेखकों और योगदानकर्ताओं को हार्दिक बधाई और धन्यवाद देती हूँ जिनकी रचनात्मकता और समर्पण से यह अंक विशेष बना है। आपके सहयोग से "सुरभि" पत्रिका लगातार नई ऊँचाइयों को छू रही है।

आशा है कि यह अंक पाठकों को न केवल आनंदित करेगा बल्कि हिंदी भाषा के प्रति उनके अनुराग को और अधिक सशक्त बनाएगा। आप सभी के निरंतर सहयोग और सृजनात्मक योगदान की अपेक्षा के साथ, इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित !

श्री. राधिका

(राधिका सुरेश)

उप महालेखाकार

ले.प.प्र.स-II, पुरी

संदेश



श्री स्वामी शुभम बैजनाथ

उप महालेखाकार

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-११) ओडिशा, भुवनेश्वर

मुझे यह जानकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से निहित राजभाषा अर्ध-वार्षिक पत्रिका सुरभि का 25वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

कार्यालय के कार्मिकों का राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम को उनकी रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका में समाहित किया गया है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका एवं इसमें प्रकाशित रचनाएं आपको राजभाषा के और करीब ला देंगी एवं लेखकों के लिए प्रोत्साहन एवं पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत होंगी। पत्रिका के प्रकाशन हेतु रचनाकारों, सम्पादक, सह सम्पादक, सहायक एवं रचनाकारों के अथक प्रयास सराहनीय हैं।

पत्रिका सुरभि के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभम स्वामी

(स्वामी शुभम बैजनाथ)

उप महालेखाकार

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-११)

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश



श्री विमलेश कुमार

उप महालेखाकार (ए.एम.जी-III)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), ओडिशा, भुवनेश्वर

यह प्रसन्नता एवं गौरव का विषय है कि कार्यालय अपनी गृह हिंदी पत्रिका "सुरभि" के 25 वें अंक को प्रकाशित करने जा रहा है। राजभाषा हिंदी के उत्थान एवं संवर्धन हेतु लगातार प्रयासरत रहना हमारा संवैधानिक दायित्व है और इस दायित्व को निभाने में गृह हिंदी पत्रिका "सुरभि" के सफल प्रकाशन का उत्कृष्ट प्रयास अत्यंत प्रशंसनीय है। हिंदी पूरे देश में जानी एवं समझे जाने वाली भाषा होने के साथ-साथ एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय जनमानस की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य है।

अपनी सरलता, मौलिकता एवं सुबोधता के कारण ही हिंदी भारतीय समाज, संस्कृति एवं साहित्य को एक धागे में पिरोकर रखती है। राजभाषा का सम्मान हम सभी का यह नैतिक कर्तव्य है। पत्रिका में प्रकाशित कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की स्वरचित रचनाएं उनके राजभाषा हिंदी के प्रति सम्मान और रूचि को दर्शाती हैं।

यह हर्ष का विषय है कि पत्रिका "सुरभि" के माध्यम से कार्यालय में एक ऐसा वातावरण तैयार हो रहा है जिससे कार्यालय के कार्मिक राजभाषा हिंदी के प्रति प्रोत्साहित हो रहे हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए मैं इस पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(विमलेश कुमार)

उप महालेखाकार (ए.एम.जी-III)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश



श्री नल्लमोतु बालकृष्णा

उप महालेखाकार (प्रशासन)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), ओडिशा, भुवनेश्वर

यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि कार्यालय की अर्धवार्षिक गृह हिंदी पत्रिका "सुरभि" का 25 वां अंक प्रकाशित हो रहा है। हिंदी भाषा का विकास उसके अधिकाधिक प्रयोग से ही संभव है एवं उसके लिए एक मंच की आवश्यकता है। पत्रिका "सुरभि" का उद्देश्य भी राजभाषा हिंदी को एक मंच प्रदान करना है।

इस अंक के प्रकाशन को अपने विभिन्न लेखों, कविताओं, संस्मरणों से आकर्षक एवं पठनीय बनाने में योगदान देनेवाले इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों एवं उनके परिवारजन का, मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। यह पत्रिका इस कार्यालय के कार्मिकों की राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा के साथ साथ उनकी साहित्यिक रुचि को भी दर्शाती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह नवीन अंक राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु एक नया मंच प्रदान करके राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी सहायक सिद्ध होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए रचनाकारों, संपादक मंडल एवं पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी पदाधिकारियों एवं उनके परिवारजनों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

बालकृष्णा

(नल्लमोतु बालकृष्णा)

उप महालेखाकार (प्रशासन)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश



श्री अशोक कुमार पंडा

कल्याण अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), ओडिशा, भुवनेश्वर

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "सुरभि" के 25 वें अंक के प्रकाशन पर सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

सुरभि के प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जागरूक करना, कार्यालय में हिंदी के प्रति एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण एवं हिंदी के प्रति उनकी रूचि को बढ़ाना है ताकि वे सभी निरंतर राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास में अपना यथासंभव योगदान देते रहें।

अपने कार्यालयीन कार्यों की अधिकता के बावजूद कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने पूर्व में प्रकाशित अंकों की भांति ही इस नवीन अंक हेतु भी अपनी रचनाओं के माध्यम से अपनी साहित्यिक प्रतिभा एवं हिंदी भाषा से उनके प्रेम का परिचय दिया है।

मैं सुरभि के 25वें अंक के माध्यम से राजभाषा हिंदी को गौरव प्रदान करने वाले रचनाकारों को जिन्होंने "सुरभि" के 25 वें अंक के प्रकाशन में अपना योगदान एवं सहयोग प्रदान किया उनका अभिनंदन करता हूँ एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(अशोक कुमार पंडा)

कल्याण अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

ओडिशा, भुवनेश्वर

संपादक की कलम से.....



श्री गिरराज शरण अग्रवाल

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), ओडिशा, भुवनेश्वर

हिंदी अपनी सरलता, सुगमता, सुबोधता एवं वैज्ञानिकता के बल पर भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं साहित्य को जीवंत बनाए हुए है। 14 सितंबर 1949 को संविधान द्वारा राजभाषा का दर्जा प्राप्त होने के बाद से आज तक हिंदी की ये गौरवमयी स्वर्णिम विकास यात्रा निरंतर रूप से जारी है। यह हम सभी का कर्तव्य है कि हम कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकतम प्रयोग कर राजभाषा को उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर ले जाने का अधिकतम प्रयास करें।

कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने भी राजभाषा हिंदी के संवर्धन के इस उद्देश्य को पूरा करने में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाई है। वे कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करके राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के लक्ष्यों को प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही कार्यालय की गृह हिंदी पत्रिका "सुरभि" हेतु भी अपनी रचनाओं का योगदान देकर राजभाषा हिंदी के प्रति अपनी रूचि दर्शाकर कार्यालय में हिंदी के लिए एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण कर रहे हैं।

विभागीय हिंदी पत्रिकाओं का राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान होता है। इस कार्यालय की गृह हिंदी पत्रिका "सुरभि" का प्रमुख लक्ष्य भी यही है। यह पत्रिका उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के सामूहिक प्रयास का प्रतिफल है जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस पत्रिका के लेखन एवं संपादन में अपना योगदान दिया है। आशा है कि हम सब मिलकर इसी तरह से हिंदी की इस गौरवमयी यात्रा को और आगे बढ़ाएंगे एवं राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में अपने योगदान में वृद्धि करते रहेंगे।

मैं प्रधान महालेखाकार महोदय, महालेखाकार महोदय एवं अन्य समूह अधिकारियों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से सुरभि का यह अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

पत्रिका को अधिक सार्थक एवं प्रभावशाली बनाने हेतु पाठकों के सुझाव आमंत्रित हैं।

(गिरराज शरण अग्रवाल)

सहा.निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

ओडिशा, भुवनेश्वर

सुरभि पत्रिका परिवार

परामर्शदाता समिति

श्री राज कुमार

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

श्री अतुल प्रकाश

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

श्रीमती राधिका सुरेश

उप महालेखाकार

ले.प.प्र.स-II, पुरी

श्री स्वामी शुभम बैजनाथ

उप महालेखाकार (प्रशासन)

(लेखापरीक्षा-II)

श्री नल्लमोतु बालकृष्णा

उप महालेखाकार (प्रशासन)

(लेखापरीक्षा-I)

संपादक मंडल

संपादक

श्री गिरराज शरण अग्रवाल

सहायक निदेशक (राजभाषा)

सह संपादक

वरिष्ठ अनुवादक

श्री पुरुषोत्तम गिरि

श्री सुंदर लाल साव

श्री संजीव कुमार यादव

कनिष्ठ अनुवादक

श्री राहुल कुमार वर्मा

श्रीमती दीपिका चटर्जी

सुश्री सुषमा साव

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं.
1	राजभाषा कार्यान्वयन को सुगम बनाने में तकनीकी टूल्स का योगदान	श्री गिरराज शरण अग्रवाल	1
2	हिंदी के विकास में योगदान देने वाले महत्वपूर्ण हस्तियाँ	श्री संजीव कुमार यादव	3
3	18वां प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन 2025 (8-10 जनवरी, 2025)	श्री अमित कुमार प्रधान	6
4	दिव्यदर्शी पथप्रदर्शक : सर रतन टाटा (लोकोपकार एवं समाज कल्याण)	श्री पुरुषोत्तम गिरि	8
5	प्राचीन लिंगराज मंदिर	श्री राहुल कुमार वर्मा	10
6	नारी का आदर	श्री गुप्त प्रसाद मिश्र	12
7	नारी: सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ कृति	सुश्री प्रियंका प्रधान	13
8	भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO): कृषि में उपलब्धियाँ	सुश्री सुतापा सरकार	14
9	आलिया और रहस्यमयी बाग	सुश्री शुभलक्ष्मी महंती	16
10	कबीरदास	श्रीमती दीपिका चटर्जी	17
11	डिजिटल अर्थव्यवस्था : एक समताकारी अथवा आर्थिक असमता का स्रोत	सुश्री स्निग्धा सेठी	18
12	छद्म नारीवाद: एक विचारणीय विषय	सुश्री निधि प्रिया	19
13	सनातन धर्म	श्री शिवाशीष पाणिग्राही	21
14	हर्ष और कृतज्ञता	श्रीमती रानी गिरि	23
15	भारत की सौर ऊर्जा क्रांति: नवीकरणीय ऊर्जा में अग्रणी	श्रीमती स्वप्नास्वरुपा पात्रा	26
16	मेरे गाँव की संस्कृति लुप्त होती जा रही है	श्री द्वारिकानाथ महाला	29
17	बहता जल	श्री पी श्रीनिवास राव	30
18	और यहीं से शुरू होती हैं कहानी	श्री अयन बेरा	32
19	कितना बदल गया ज़माना	श्री मनीष कुमार	35
20	यही हमारी कहानी है	अजय साव	36
21	ज़िन्दगी	श्री आनंद सिंह कोस्टा	37
22	विकास या विनाश	श्री आयुष्मान वर्मा	37

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट: पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरिक्षा (II), पश्चिम बंगाल
ऑडिट अकाउंट्स (सी.ए.ए.सी.), एच.सी.पी.
पत्र सं. 190
कोलकाता - 700 044

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL,
AUDIT (II),
CGO COMPLEX, 1ST FLOOR, 3RD BLOCK,
WEST BENGAL
SECTOR I,
SALT LAKE CITY,
KOLKATA-700044

दिनांक: 27/01/2025
27 JAN 2025

सेवा में,
उप महालेखाकार/प्रशासन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरिक्षा-I)
ओडिशा, भुवनेश्वर-751001
To,
The Deputy Accountant General /Administration
Office of the Pr. Accountant General (Audit-I)
Odisha, Bhubaneswar-751001

विषय: कार्यालयीन अर्थात् हिंदी पत्रिका "सुरभि" के 24वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।
महोदय/महोदय

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित "सुरभि" के 24वें अंक की ई-पत्रिका की प्रतिलिपि प्राप्त हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं शानदार एवं रोचक हैं। पत्रिका का अवलोकन एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही साथ पत्रिका का कवरेज भी अत्यंत आकर्षक है। कवरेज और लेख भी भावपूर्ण, साफ़ तथा मन को रू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगीं वे हैं- बाप, पंचवट, हाथी कोई नहीं साथी, श्री वैद्यन महाराष्ट्र, एक दोस्त, नारी तेरी छप जवकार तथा विदेशिय रानी आदि।
आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उच्चतम मूल्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी) कक्ष

Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2334-7854; E-mail: agauwesthencal2.dag.gov.in

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़
Indian Audit & Accounts Department
Office of The Director General of Audit (Central),
Chandigarh

डीजीए/राजभाषा/सन्देश/2024-25 / 254 दिनांक 3/2/2025

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरिक्षा-I),
ओडिशा, भुवनेश्वर - 751001

का.प्र-II(लेख-I) साधारण का.सं. 8/12
OM-II (Audit-I) Ordinary Dy. No. 10/02/25

विषय:- हिंदी ई-पत्रिका "सुरभि" के 24 वें अंक संबंध में।
महोदय/महोदय

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका "सुरभि" की एक ई-प्रति दिनांक 24.01.2025 को प्राप्त हुई। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं प्रशंसनीय व पठनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल संपादक-मंडल को हार्दिक बधाई।

आशा है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उच्चतम मूल्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

सधन्यवाद।
भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरिक्षा
ऑडिट अकाउंट्स (सी.ए.ए.सी.), एच.सी.पी.
नई दिल्ली-110002

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL
OF AUDIT (CENTRAL EXPENDITURE),
AUDIT BHAWAN, INDRAPRASTHA ESTATE,
NEW DELHI-110002

दिनांक: 14.02.2025

सेवा में,
उप-महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरिक्षा - I)
ओडिशा,
भुवनेश्वर - 751 001.

विषय- हिंदी गृह पत्रिका "सुरभि" के 24वें अंक के संबंध में।
महोदय,
आपके कार्यालय के पत्र सं. राजभाषा अनुभाग/07/सुरभि/2024-25/249 दिनांक 24.01.2025 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका "सुरभि" के 24वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्चस्तरीय, शानदार एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री विमलेश कुमार, उप महालेखाकार महोदय का लेख "समानता और उसका मानवतावादी दर्शन", श्री पुरुषोत्तम गिरी का "भारतीय हस्तशिल्प की प्रतिष्ठा ओडिशा की 'वारकरी', श्री पी श्रीविद्यास राव का "पंचवट डेन" एवं श्री अमित कुमार प्रधान का "स्वास्थ्य के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता): संभावनाएं, चुनौतियां और समाधान" बहुत ही शानदार लेख हैं।
इसके अतिरिक्त सुश्री दिव्यका फलेई की "आबादी का पहला दिन" एवं श्रीमती एलता की "नारी तेरी बप जवकार" कविता पठनीय हैं।
पत्रिका के श्रेष्ठ संस्करण हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उच्चतम मूल्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय
हिंदी अधिकारी

सं/हिंदी अनुभाग/राजभाषा और प्रतिक्रिया // 2022-23

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरिक्षा-II), महाराष्ट्र,
नागपुर
O/o the Principal Accountant General (Audit)-II,
Maharashtra, Nagpur-440001

सं. हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया / 20/2024-25/ज.क.147 दिनांक: 04/02/2025

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (लेखापरिक्षा-I)
ओडिशा, भुवनेश्वर- 751001
विषय:- हिंदी ई-पत्रिका "सुरभि" के 24वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/महोदय,
आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "सुरभि" के 24वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष पश्यन। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कवितें, उत्कृष्ट एवं आनंदपूर्ण हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएं उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

क्र.	नाम/पदनाम	रचनाएं
1.	श्री राज कुमार, प्रधान महालेखाकार	प्रकाशना
2.	श्री विमलेश कुमार, उप-महालेखाकार	समानता और उसका मानवतावादी दर्शन
3.	श्री गिरिराज शंकर अग्रवाल, हिंदी अधिकारी	सज्जमानों को मानवता में आने वाले भारतीय राजभाषा समेलनों का योगदान
4.	सुश्री अंजलि सरकर, स.जे.प.अ	नव भारत के निर्माण में महिलाओं की भूमिका
5.	श्री राजेश कुमार वर्मा, कनि.अनुवादक	हिंदी - अंग्रेजी से राजभाषा तक का सफर
6.	सुश्री दिव्यका फलेई, सुपुत्री- श्री गोविन्द सिंह पटेल (लेखापरिक्षा)	आज की या पहला दिन

पत्रिका का मुख्य अंतर्गत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल एवं प्रगति हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उच्चतम मूल्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।
(वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशासन के अनुमोदन दिनांक 03/02/2025 से जारी)

भवदीय,
प्रियंका गोस्वामी
PRIYANKA GOSWAMI
हिंदी अधिकारी



राजभाषा कार्यान्वयन को सुगम बनाने में तकनीकी टूल्स का योगदान

श्री गिरराज शरण अग्रवाल

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

हम देख रहे हैं कि विगत वर्षों में शासकीय कार्यों में हिंदी के प्रयोग में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। इसका श्रेय मुख्यतः राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार को जाता है। माननीय गृह मंत्री के नेतृत्व व दिशा-निर्देशों के फलस्वरूप राजभाषा विभाग के साथ-साथ भारत सरकार के अन्य मंत्रालय, विभाग, अधीनस्थ कार्यालयों, स्वायत्त निकायों, बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में दिन प्रतिदिन राजभाषा हिंदी में कार्य करने की प्रवृत्ति विकसित हो रही है। इसका श्रेय राजभाषा विभाग द्वारा किए जा रहे अभिनव प्रयासों को जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन को सुगम बनाने हेतु विभिन्न तकनीकों का समावेश किया जा रहा है जिसके अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा मुख्यतः वर्ष 2018 में कंठस्थ, 2022 में कंठस्थ 2.0 अनुवाद टूल, हिंदी शब्द सिंधु शब्दकोश, ई सरल हिंदी वाक्य कोश विकसित किए गए हैं:

कंठस्थ 2.0

कंठस्थ जिसका उप शीर्षक अनुवाद सारथी भी है। यह ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित एक टूल है। जो अंग्रेजी से हिंदी एवं हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद उपलब्ध कराता है। चूंकि यह स्मृति आधारित टूल है यह नाम इसके कार्य के अनुसार बिल्कुल सटीक बैठता है।

ट्रांसलेशन मेमोरी मशीन साधित अनुवाद प्रणाली का एक भाग है जिससे अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुतः एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा के वाक्यों एवं लक्षित भाषा में उन वाक्यों के अनुवादित रूप को एक साथ रखा जाता है।

ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक द्वारा पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनः प्रयोग किया जा सकता है। यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य ट्रांसलेशन

मेमोरी के डेटाबेस से पूर्णतः या आंशिक रूप से मिलता है तो यह सिस्टम उस वाक्य के अनुवाद को ट्रांसलेशन मेमोरी से लाता है। अनुवाद के लिए सिस्टम का निरंतर प्रयोग करते रहने से ट्रांसलेशन मेमोरी का डेटाबेस उत्तरोत्तर बढ़ता रहता है।

ट्रांसलेशन मेमोरी का डेटाबेस दो प्रकार का होता है ग्लोबल ट्रांसलेशन मेमोरी (जी.टी.एम.) एवं लोकल ट्रांसलेशन मेमोरी (एल.टी.एम.)। लोकल ट्रांसलेशन मेमोरी (एल.टी.एम.) प्रत्येक प्रयोक्ता के आईडी पर अलग अलग होती है जबकि ग्लोबल ट्रांसलेशन मेमोरी (जी.टी.एम.) एक सामूहिक डेटाबेस है जो कि राजभाषा विभाग के सर्वर पर उपलब्ध है। पुनरीक्षण के पश्चात लोकल ट्रांसलेशन मेमोरी, ग्लोबल ट्रांसलेशन मेमोरी बन जाती है।

कंठस्थ 2.0 की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि यह सम्पूर्ण फाइल का अनुवाद, मूल फाइल में दिए गए पिक्चर्स, चार्ट, ग्राफ्स आदि सहित अनुवादित फाइल में यथास्थान प्रस्तुत करता है। अन्य उपलब्ध अनुवाद सॉफ्टवेयरों में प्रयोक्ता को केवल टेक्स्ट के अनुवाद की सुविधा होती है। इस हेतु उसे बार बार टेक्स्ट को कॉपी पेस्ट कर अनुवाद प्राप्त करना होता है। यह सुविधा किसी अन्य सॉफ्टवेयर में उपलब्ध नहीं है जो इसे अनूठा बनाती है।

इसके अतिरिक्त कंठस्थ 2 में ग्लोबल ट्रांसलेशन मेमोरी एवं लोकल ट्रांसलेशन मेमोरी का निर्माण, ऑटोमेटिक स्पीच रिकॉग्निशन, अनुवाद के लिए टीएम से पूर्ण मिलान/आंशिक मिलान, पैकेज बनाने/अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/भेजने की सुविधा, प्रोजेक्ट बनाने, तुरंत अनुवाद, नोटिफिकेशन, फाइल शेयर करना, अनुवादित फाइल का विश्लेषण, न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन, चैटबॉट, द्विभाषिक फाइल को डाउनलोड/अपलोड करना, गुणवत्ता की जांच इत्यादित विशेषताएं हैं।

उपर्युक्त में से कुछ प्रमुख विशेषताओं का विवरण निम्नानुसार है:

न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन

कंठस्थ के पहले संस्करण में यह केवल स्मृति आधारित ही अनुवाद उपलब्ध कराता था किंतु कंठस्थ 2 में मशीनी अनुवाद की भी सुविधा प्रदान की गई है। यदि सॉफ्टवेयर को अपनी मेमोरी से कोई अनुवाद प्राप्त नहीं होता है तो वह न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन प्रणाली के माध्यम से अनुवाद उपलब्ध कराता है।

इंस्टेंट ट्रांसलेशन (तुरंत अनुवाद)

कंठस्थ 2.0 में यदि प्रयोक्ता फोल्डर नहीं बनाना चाहता है तो वह इंस्टेंट ट्रांसलेशन (तुरंत अनुवाद) पर क्लिक कर अनुवाद प्राप्त कर सकता है इसके अंतर्गत प्रयोक्ता स्क्रीन पर स्रोत वाक्य या पैरा को टाइप कर सकता है या फिर कॉपी किए हुए वाक्य या पैरा पेस्ट कर इंस्टेंट ट्रांसलेशन या ऑफन टेक्स्ट इन एडिटर वाले बटन पर क्लिक कर अनुवाद प्राप्त कर सकता है और यदि कोई फाइल है तो ऑफन फाइल इन एडिटर में जाकर अनुवाद प्राप्त कर सकता है।

वॉइस टायपिंग

कंठस्थ 2.0 की एक महत्वपूर्ण विशेषता है वॉयस टाइपिंग (बोलकर टाइप करना)। जैसा कि हम सभी का अनुभव है कि किसी भी टेक्स्ट का अनुवाद प्राप्त करने के लिए पहले हमें उसे टाइप करना होता है इस कार्य हेतु अत्यधिक समय की आवश्यकता होती है।

यह आज के समय की एक महत्वपूर्ण तकनीक है जो किसी व्यक्ति द्वारा बोले गये शब्दों या वाक्यों को इनपुट की तरह लेकर उसे लिखित रूप में प्रस्तुत कर देती है। यह अत्यंत ही सुविधाजनक तकनीक है क्योंकि बोलना टाइप करने की तुलना में अधिक तेज गति से होता है। साथ ही वर्तमान इसमें वर्तनी एवं वाक्य की अशुद्धि से बचा जा सकता है।

हिंदी शब्द सिंधु शब्दकोश

हिंदी शब्द सिंधु एक वृहद शब्दकोश है जिसे केंद्रीय हिंदी निदेशालय तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग,

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा विकसित किया गया है इस शब्दकोश में जनसम्पर्क, आयुर्वेद, खेलकूद, अंतरिक्ष विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान, वेमानिकी, कंप्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, भू-गर्भशास्त्र, मानविकी आदि से संबंधित शब्दावली के साथ-साथ पारंपरिक शब्दावली को भी समाहित किया गया है साथ ही देश की अन्य भाषाओं के शब्दों से हिंदी को समृद्ध करने के लिए इसमें भारतीय भाषाओं के शब्द भी शामिल किए गए हैं। यह पूर्णतः डिजिटल एवं खोजपरक है। इस शब्दकोश का लोकार्पण 14 सितम्बर 2022 को सूरत में आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में किया गया था। शब्दकोश में शब्द के अर्थ के साथ शब्द की व्याकरणिक श्रेणी, वाक्य प्रयोग, विषय क्षेत्र तथा संबंधित विषय संबंधी जानकारीयां भी दी गई हैं।

ई सरल हिंदी वाक्यकोश

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने हेतु ई सरल हिंदी वाक्यकोश विकसित किया गया है। जो narakas.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है। इसके मुख्य पृष्ठ पर लगभग 13 हजार से अधिक वाक्य अंग्रेजी और हिंदी में दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त मंत्रालय चुनें शीर्षक के अंतर्गत 84 मंत्रालय/विभागों से संबंधित वाक्य अंग्रेजी और हिंदी में उपलब्ध हैं जिन्हें मंत्रालय/विभाग वार देखा जा सकता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि राजभाषा विभाग द्वारा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के महत्व को समझते हुए दिन-प्रतिदिन नवीन टूल्स विकसित किए जा रहे हैं जो राजभाषा कार्यान्वयन को सुगम बनाने में अत्यधिक सहायक सिद्ध हो रहे हैं। उपर्युक्त टूल्स से मूल कार्य हिंदी में करना सम्भव हो गया है जिससे राजभाषा कार्यान्वयन को नई गति मिली है। आशा है कि पाठकगण उपर्युक्त टूल्स का अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में प्रयोग कर मूल कार्य हिंदी में कर अपने संवैधानिक कर्तव्यों का निर्वहन कर राजभाषा हिंदी को नई ऊचाईयां प्रदान करेंगे।



हिंदी के विकास में योगदान देने वाली महत्वपूर्ण हस्तियां

श्री संजीव कुमार यादव

वरिष्ठ अनुवादक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

हमारा देश विविधता में एकता का देश है। यहाँ विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र आदि के लोग रहते हैं। भौगोलिक दृष्टि से सभी का खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज एक दूसरे से भिन्न हैं। इसके साथ ही हमारा देश विविध भाषाओं की भूमि है, जहाँ प्रत्येक क्षेत्र अपनी अनूठी भाषायी विरासत का दावा करता है। यहाँ अनेक भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं। भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में कुल 22 भाषाओं को शामिल किया गया है। सभी भाषाओं की अपनी-अपनी अलग बोलियां भी हैं। संस्कृत भाषा ज्यादातर भाषाओं की जननी मानी जाती है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देश के लोगों को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाई है। देशभक्ति गीतों, भाषणों और हिंदी साहित्य ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारतीयों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

किसी भी राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति के विकास में उसकी भाषा का विशेष योगदान होता है क्योंकि भाषा और संस्कृति का आपस में अटूट संबंध होता है। भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। तथापि यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत की एकता व संस्कृति को मजबूती देने में हिंदी भाषा का विशेष योगदान है।

भारत के कई महापुरुषों/हस्तियों/साहित्यकारों ने हिंदी भाषा को वैश्विक पटल पर पहुँचाने में सशक्त भूमिका निभाई है। उनका विवरण निम्नानुसार है।

महात्मा गांधी- भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का भारत की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी के उत्थान में विशेष योगदान है। महात्मा गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका से भारत आकर अपना पहला महत्वपूर्ण भाषण 6 फरवरी 1916 को बनारस में दिया था। सर्वप्रथम उन्होंने समारोह की

कार्यवाही एक विदेशी भाषा, अंग्रेजी में चलाए जाने पर आपत्ति की और दुःख जताया। महात्मा गांधी किसी भाषा के विरोधी नहीं थे। अधिक-से-अधिक भाषाओं को सीखना वे उचित समझते थे। प्रत्येक भाषा के ज्ञान को वे महत्वपूर्ण मानते थे किंतु उन्होंने निज मातृभाषा और हिंदी का सदैव प्रबल समर्थन किया। एक अवसर पर उन्होंने कहा था- ‘भारत के युवक और युवतियां अंग्रेजी और दुनिया की दूसरी भाषाएं खूब पढ़ें, मगर मैं हरगिज यह नहीं चाहूंगा कि कोई भी हिन्दुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाये अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊंचे से ऊंचा चिन्तन नहीं कर सकता।’

गांधीजी की इच्छा थी कि भारत के प्रत्येक प्रदेश में शिक्षा का माध्यम उस प्रदेश की भाषा को होना चाहिए। उनका कथन था- ‘राष्ट्र के विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में नहीं, अन्य भाषा में शिक्षा पाते हैं तो वे आत्महत्या करते हैं। इससे उनका जन्मसिद्ध अधिकार छिन जाता है। विदेशी भाषा से बच्चों पर बेवजह जोर पड़ता है और उनकी सारी मौलिकता नष्ट हो जाती है। इसलिए किसी विदेशी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना मैं राष्ट्र का बड़ा दुर्भाग्य मानता हूँ।’

महात्मा गांधी ने सभी भारतीय भाषाओं का समान आदर और हिंदी के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए कहा था- ‘महान प्रांतीय भाषाओं को उनके स्थान से हटाने की कोई बात ही नहीं है क्योंकि राष्ट्रीय भाषा की इमारत प्रांतीय भाषाओं की नींव पर ही खड़ी की जानी है। दोनों का लक्ष्य एक-दूसरे की जगह लेना नहीं बल्कि एक-दूसरे की कमी को पूरा करना है।’

महात्मा गांधी के विचार, महान भारतीय नेताओं की भावना और हिंदी-भाषा-भाषी जनता की विशाल संख्या को दृष्टिगत रखते हुए पर्याप्त चिंतन-मनन के उपरान्त भारतीय संविधान निर्माताओं ने हिंदी को भारतीय संविधान में राजभाषा की प्रतिष्ठा प्रदान की थी।

पं. गोविंद बल्लभ पंत - पं. गोविंद बल्लभ पंत ने भारतीय संविधान में हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता के बाद जब राजभाषा की चर्चा संविधान सभा में हुई तो हिंदी को लेकर काफी विरोध शुरू हुआ। पंतजी ने अपनी मुखरता से देवनागरी में लिखी जाने वाली हिंदी भाषा को राजभाषा बनाए जाने की वकालत की। उनके इस विचार को कई नेताओं द्वारा सहमति मिली। जिसके बाद संविधान सभा में एकमत से निर्णय लिया गया। उन्होंने कहा था-"हिंदी का प्रचार व विकास कोई नहीं रोक सकता है।"

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन- राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के अग्रणी पंक्ति के नेता थे। टण्डन जी का राजनीति में प्रवेश हिंदी प्रेम के कारण ही हुआ। राजर्षि में बाल्यकाल से ही हिंदी के प्रति अनुराग था। इस प्रेम को बालकृष्ण भट्ट और मदन मोहन मालवीय जी ने प्रौढ़ता प्रदान की। उन्होंने कहा था- जीवन के छोटे से छोटे क्षेत्र में हिंदी अपना दायित्व निभाने में समर्थ है।

हिंदी को राष्ट्रभाषा और 'वन्देमातरम्' को राष्ट्रगीत स्वीकृत कराने के लिए टण्डन जी ने अपने सहयोगियों के साथ एक और अभियान चलाया था। उन्होंने करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर और समर्थन पत्र भी एकत्र किए थे। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने 10 अक्टूबर, 1910 को 'नागरी प्रचारिणी सभा' एवं 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना की। इसी क्रम में 1918 में उन्होंने 'हिंदी विद्यापीठ' और 1947 में 'हिंदी रक्षक दल' की स्थापना की।

डॉ राजेंद्र प्रसाद- भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद जी का हिंदी के प्रति अगाध प्रेम था। हिंदी पत्र-पत्रिकाओं जैसे भारत मित्र, भारतोदय, कमला आदि में उनके लेख छपते थे। उनके निबन्ध सुरुचिपूर्ण तथा प्रभावकारी होते थे। 1912 ई. में जब अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन कलकत्ते में हुआ तब स्वागतकारिणी समिति के वे प्रधानमन्त्री थे। 1920 ई. में जब अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का 10वाँ अधिवेशन पटना में हुआ तब भी वे प्रधानमन्त्री थे। 1926 ई० में वे बिहार प्रदेशीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के और 1927 ई० में उत्तर प्रदेशीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के सभापति थे। हिंदी में उनकी आत्मकथा बहुत प्रसिद्ध पुस्तक है। उन्होंने कहा था- हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य को सर्वोत्तम बनाना हमारा कर्तव्य है।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नायकों में से एक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

जी का हिंदी भाषा के प्रति विशेष लगाव था। वे कहते थे कि – “निःसंदेह हिंदी दूसरे कार्यों के लिए प्रांतीय भाषाओं की जगह तो ले ही नहीं सकती, सभी प्रांतीय कार्यों के लिए प्रांतीय भाषाएँ ही पहले की तरह काम में आती रहेंगी। प्रांतीय शिक्षा और साहित्य का विकास प्रांतीय भाषाओं के द्वारा ही होगा; लेकिन एक प्रांत दूसरे प्रांत से मिले तो पारस्परिक विचार विनिमय का माध्यम हिंदी ही होनी चाहिए क्योंकि हिंदी अब भी अधिकांश प्रांतों में समझ ली जाती है और बोलने तथा चिट्ठी लिखने लायक हिंदी थोड़े ही समय में सीख ली जाती है। इस विषय में कोई भी प्रांतीय भाषा हिंदी का स्थान नहीं ले सकती।” तिलक जी प्रांतीय भाषाओं की अस्मिता के वजूद को स्वीकारते हुए हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकारने की बात करते थे। उन्होंने कहा था कि मैं उन लोगों में से हूँ जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।

पंडित मदन मोहन मालवीय- हिंदी के उत्थान में मालवीय जी की भूमिका ऐतिहासिक है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नेतृत्व में हिंदी गद्य के निर्माण में संलग्न मनीषियों में 'मकरंद' तथा 'झक्कड़सिंह' के उपनाम से विद्यार्थी जीवन में रसात्मक काव्य रचना के लिये ख्यातिलब्ध मालवीयजी ने देवनागरी लिपि और हिंदी भाषा को पश्चिमोत्तर प्रदेश व अवध के गवर्नर सर एंटोनी मैकडोनेल के सम्मुख 1898 ई० में विविध प्रमाण प्रस्तुत करके कचहरियों में प्रवेश दिलाया। हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन (काशी-1910) के अध्यक्षीय अभिभाषण में हिंदी के स्वरूप निरूपण में उन्होंने कहा कि "उसे फारसी-अरबी के बड़े बड़े शब्दों से लादना जैसे बुरा है, वैसे ही अकारण संस्कृत शब्दों से गूँथना भी अच्छा नहीं और भविष्यवाणी की कि एक दिन यही भाषा राष्ट्रभाषा होगी।" सम्मेलन के एक अन्य वार्षिक अधिवेशन (बम्बई-1919) के सभापति पद से उन्होंने हिंदी उर्दू के प्रश्न को, धर्म का नहीं अपितु राष्ट्रीयता का प्रश्न बतलाते हुए उद्घोष किया कि साहित्य और देश की उन्नति अपने देश की भाषा द्वारा ही हो सकती है। समस्त देश की प्रांतीय भाषाओं के विकास के साथ-साथ हिंदी को अपनाने के आग्रह के साथ यह भविष्यवाणी भी की कि कोई दिन ऐसा भी आयेगा कि जिस भाँति अंग्रेजी विश्वभाषा हो रही है उसी भाँति हिंदी का भी सर्वत्र प्रचार होगा। इस प्रकार उन्होंने हिंदी को अन्तर्राष्ट्रीय रूप का लक्ष्य भी दिया।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी – चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जी कई भारतीय भाषाओं के ज्ञाता थे। वे न केवल दक्षिण भारत के महत्वपूर्ण नेता थे बल्कि उनकी गिनती भारत के प्रमुख महापुरुषों

में की जाती है। उन्होंने हिंदी के विकास के हित में कहा- यह भारत की जनता के बहुत बड़े वर्ग की और यदि हम छोटे-मोटे बोलीगत रूप भेदों को छोड़ दें तो यह बहुमत की भाषा है। भारत के सभी भागों में शिक्षा का एक उद्देश्य हिंदी का पूर्ण ज्ञान भी होना चाहिए। हिंदी का भारत की राष्ट्रभाषा होना निश्चित है। संचार व्यवस्था और वाणिज्य की प्रगति निश्चय ही यह कार्य संपन्न करेगी।

अटल बिहारी बाजपेयी- भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी जी का हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान है। वे हिंदी कवि, पत्रकार व एक प्रखर वक्ता थे। उन्होंने लम्बे समय तक राष्ट्रधर्म, पाञ्चजन्य (पत्र) और वीर अर्जुन आदि राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। अटल जी ही पहले विदेश मंत्री थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण देकर भारत को विश्वमंच पर गौरवान्वित किया था। संसद में उनके द्वारा दिए गए भाषणों को आज भी लोग ध्यान से सुनते हैं।

नरेंद्र मोदी- वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हिंदी अपनी विकास यात्रा के सर्वोच्च शिखर पर है। श्री मोदी ने वैश्विक मंचों यथा संयुक्त राष्ट्र, जी-20 सम्मेलन, विदेशों में प्रवासी सम्मेलन इत्यादि को हिंदी संबोधित कर हिंदी को नई ऊंचाईयों पर पहुँचाया है। श्री मोदी ने दुनिया को हिंदी भाषा के सामर्थ्य से परिचित कराया और देशवासियों में स्वाभिमान का भाव भी जागृत किया है।

माननीय प्रधानमंत्री के नेतृत्व में संघ के सभी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में निरंतर वृद्धि हो रही है। इस हेतु भारत सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने विगत वर्षों में अद्यतन तकनीकी का उपयोग कर बहुभाषी माध्यम से

हिंदी स्वयं शिक्षण टूलस जैसे लीला सॉफ्टवेयर, ई महाशब्दकोश, अनुवाद टूल कंठस्थ एवं कंठस्थ 2, हिंदी बृहद शब्दकोश, हिंदी शब्द सिंधु, हिंदी ई सरल हिंदी वाक्य कोश विकसित किए हैं जिससे मूल कार्य हिंदी में करना सुगम हो गया है जिसने राजभाषा कार्यान्वयन को नई गति प्रदान की है।

इसके अतिरिक्त हिंदी साहित्यकारों- प्रेमचंद, रामधारी सिंह दिनकर, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, माखनलाल चतुर्वेदी, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, रामचंद्र शुक्ल, रामवृक्ष वेणीपुरी, फणीश्वरनाथ रेणु संत विनोबा भावे, सरदार वल्लभ भाई पटेल, रवींद्र नाथ टैगोर, स्वामी दयानंद सरस्वती, सुभाष चंद्र बोस आदि ने सराहनीय कार्य किया।

हिंदी के विकास की गाथा में भारतीय हिंदी सिनेमा को भी भूलाया नहीं जा सकता है। गुरुदत्त, दिलीप कुमार, राज कपूर, राजेश खन्ना, अमिताभ बच्चन जैसे कई अभिनेताओं की फिल्मों ने न सिर्फ भारत में हिंदी भाषा का प्रचार किया अपितु विदेशों में भी हिंदी भाषा का परचम लहराया है। आज भी दक्षिण भारत और पूर्वोत्तर भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार में भारतीय हिंदी सिनेमा एवं टीवी सीरियल आदि का विशेष योगदान रहा है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि हिंदी की विकास यात्रा में देश के सभी हिस्सों, सभी वर्गों व विशिष्ट व्यक्तियों से लेकर जनमानस तक योगदान रहा है। आज हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है। हिंदी भाषा के वैज्ञानिक भाषा होने, विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पठन-पाठन एवं व्यापक जनाधार को देखते हुए कहा जा सकता है कि हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा एवं अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनने की ओर अग्रसर है।

जय हिंद, जय हिंदी।





18वां प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन 2025 (8-10 जनवरी, 2025)

श्री अमित कुमार प्रधान

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)

18वां प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन 2025, 8 से 10 जनवरी 2025 के बीच ओडिशा भुवनेश्वर में आयोजित किया गया। यह पूर्वी भारत में आयोजित होने वाला पहला प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन था। इसे भारत सरकार के 'पूर्वोदय' को ध्यान में रखकर आयोजित किया गया है। दक्षिण पूर्व एशिया के साथ ओडिशा के बरसों पुराने समुद्री संबंध रहे हैं और आधुनिक समय में इन संबंधों को नवीनीकृत और पुनर्जीवित किया जा रहा है। इस प्रकार, ओडिशा में प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन 2025 प्रवासी भारतीयों के साथ भारत के जुड़ाव को गहरा करने के साथ-साथ हमारी 'एक्ट ईस्ट नीति' को भी मजबूत करता है। प्रवासी भारतीय दिवस 2025 में 75 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

पिछले कई वर्षों से चली आ रही परंपरा के अनुसार, सम्मेलन का पहला दिन 08 जनवरी 2025 युवा प्रवासी भारतीय दिवस के लिए समर्पित किया गया। इसमें न्यूजवीक के सीईओ डॉ. देव प्रगाद सम्माननीय अतिथि के तौर पर शामिल हुए। प्रवासी भारतीय दिवस 2025 के पहले महाधिवेशन का शीर्षक था "सीमाओं से परे: भूमंडलीकृत विश्व में प्रवासी युवा नेतृत्व" जिसकी अध्यक्षता युवा कार्यक्रम और खेल एवं श्रम और रोजगार मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने की। अन्य वक्ताओं में राजनीति, व्यापार और शिक्षा के क्षेत्रों से प्रवासी नेता शामिल थे। विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर और ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी की अध्यक्षता में एक संयुक्त व्यापार सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र के दौरान, ओडिशा में व्यापार के अवसरों और ओडिशा के आर्थिक और तकनीकी विकास से वैश्विक निवेशकों को होने वाले लाभ पर प्रकाश डाला गया। इसके अलावा, ओडिशा सरकार ने ओडिशा पर दो विषयगत सत्र भी आयोजित किए, जिनका शीर्षक था: "भारत के सबसे गुप्त रहस्य का अनावरण" और "विकसित ओडिशा: आगे की राह"। राज्य के कला रूपों को प्रदर्शित करने वाले एक आकर्षक सांस्कृतिक प्रदर्शन के साथ दिन का समापन हुआ।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 09 जनवरी 2025 को प्रवासी भारतीय दिवस 2025 का उद्घाटन किया। प्रवासी भारतीय दिवस 2025 की मुख्य अतिथि, त्रिनिदाद और टोबैगो गणराज्य की राष्ट्रपति महामहिम क्रिस्टीन कार्ला कंगालू ने सभा को वर्चुअल माध्यम से संबोधित किया। अपने संबोधन के दौरान उन्होंने अपने भारतीय पूर्वजों के साथ-साथ, त्रिनिदाद और टोबैगो में भारतीय प्रवासियों के योगदान को भी स्नेह और गर्व के साथ याद किया। उन्होंने वैश्विक उन्नति और विकास में भारत के उल्लेखनीय योगदान पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में, प्रवासी भारतीयों से विकसित भारत 2047 के लक्ष्य में योगदान देने का आग्रह किया। उन्होंने प्रवासी सदस्यों को ऐतिहासिक दस्तावेजों, फिल्मों, वृत्तचित्रों और अनुसंधान के डिजिटलीकरण जैसी पहलों के माध्यम से प्रवासी इतिहास के संरक्षण की दिशा में प्रयास करने के लिए भी प्रोत्साहित किया। इस दौरान आयोजित एक गिरमिटिया सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने प्रवासी समुदाय को साथ जोड़कर चलने की बात भी कही। इसके अलावा, प्रधानमंत्री ने प्रवासी भारतीयों से भारत की यात्रा करने, विशेष रूप से महाकुंभ 2025 में भाग लेने तथा 'चलो इंडिया' पर्यटन अभियान में योगदान देने का आग्रह किया। प्रधानमंत्री ने प्रवासी भारतीय दिवस 2025 के एक भाग के रूप में, प्रवासी भारतीय एक्सप्रेस को वर्चुअल माध्यम से हरी झंडी दिखाई और साथ ही, विश्वरूप राम; प्रवासी भारतीयों के इतिहास का अभिलेख - मांडवी से मस्कट तक; प्रौद्योगिकी और विकसित भारत में प्रवासी भारतीयों का योगदान एवं ओडिशा की आर्थिक प्रगति और विरासत सहित कई प्रदर्शनियों का उद्घाटन भी किया। प्रधानमंत्री ने प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार और भारत को जानिए क्विज़ के विजेताओं से भी बातचीत की। इस सम्मेलन के दौरान भारत के प्रधानमंत्री ने प्रवासी भारतीय एक्सप्रेस का उद्घाटन किया, जो भारतीय प्रवासियों के लिये एक विशेष पर्यटक ट्रेन है। प्रवासी भारतीय एक्सप्रेस का संचालन विदेश मंत्रालय की प्रवासी तीर्थ दर्शन योजना के अंतर्गत किया गया। इस अवसर पर गुजरात

के मांडवी से ओमान के मस्कट में प्रवास करने वाले लोगों के दुर्लभ दस्तावेजों को प्रदर्शित करने के क्रम में एक प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया गया। प्रधानमंत्री ने गिरमिटिया (स्वतंत्रता-पूर्व भारत के गिरमिटिया मजदूर) के महत्व पर प्रकाश डाला जिन्हें फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद और टोबैगो आदि देशों में भेजा गया था। गिरमिटियाओं का एक व्यापक डाटाबेस बनाने का भी सुझाव दिया गया।

दूसरे दिन, "रास्ते बनाए, दूरियां मिटाई: प्रवासी कौशल की कहानियां" और "ग्रीन कनेक्शन: सतत विकास में प्रवासी समुदाय का योगदान" शीर्षक पर महाधिवेशन आयोजित किए गए। इन सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम, श्रम और रोजगार राज्य मंत्री श्रीमती शोभा करंदलाजे एवं इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी, सूचना और प्रसारण एवं रेलवे मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने की। ICCR द्वारा आयोजित "भारत महोत्सव" नामक एक शानदार सांस्कृतिक प्रदर्शन के साथ दूसरे दिन का समापन हुआ।

महाधिवेशनों के साथ तीसरा दिन आरंभ हुआ। इसमें डॉ. एस जयशंकर की अध्यक्षता में आयोजित दिन के पहले महाधिवेशन का शीर्षक था: "प्रवासी दिवस: महिला नेतृत्व और प्रभाव का उत्सव - नारी शक्ति"। विदेश मंत्री ने भारत सरकार की कई पहलों के बारे में बात की जिनसे महिला सशक्तिकरण और विकसित भारत विज़न में योगदान मिला है। दिन का दूसरा महाधिवेशन संस्कृति और पर्यटन मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसका शीर्षक था "प्रवासी संवाद: संस्कृति, संबंध और अपनेपन की कहानियां"।

प्रवासी भारतीय दिवस 2025 के दौरान, विदेश मंत्री और अन्य केंद्रीय मंत्रियों ने अमेरिका, ब्रिटेन, कतर, मलेशिया, मॉरीशस, ओमान, सऊदी अरब, म्यांमार, संयुक्त अरब अमीरात आदि देशों से आए प्रवासी समूहों के साथ बातचीत की।

प्रवासी भारतीय दिवस 2025 के समापन सत्र की अध्यक्षता भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने की। अपने संबोधन में राष्ट्रपति जी ने प्रवासी भारतीयों की अदम्य भावना की सराहना की। उन्होंने महिलाओं, छात्रों और युवाओं के योगदान का विशेष उल्लेख किया जिन्होंने प्रवासी समुदाय की भावी पीढ़ियों के लिए पथप्रदर्शक बताया। उन्होंने वाणिज्य दूतावास सेवाओं को बढ़ाने के लिए सरकार के विभिन्न प्रयासों के बारे में भी चर्चा की। साथ ही, प्रवासी समुदाय से 'भारत को जानिए कार्यक्रम' जैसी पहलों में सक्रिय रूप से भाग लेने का आग्रह भी किया। हाल ही में सरकार द्वारा चलाए गए बचाव अभियानों का हवाला देते हुए, राष्ट्रपति ने इस बात पर ज़ोर दिया कि भारत सरकार ने हमेशा प्रवासी भारतीयों का सहयोग करने और उनके संरक्षण को प्राथमिकता दी है। राष्ट्रपति ने 24 देशों के 27 व्यक्तियों को प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार प्रदान किए। उस्ताद श्री अभय रुस्तम सोपोरी के भावपूर्ण संतूर संगीत कार्यक्रम के साथ प्रवासी भारतीय दिवस 2025 का सुंदर समापन हुआ।

जैसे-जैसे भारत अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी की ओर बढ़ रहा है, वर्ष 2047 के लिये साझा दृष्टिकोण में निरंतर और संरचित प्रवासी भागीदारी शामिल होनी चाहिए। इसमें विशिष्ट लक्ष्यों के साथ दीर्घकालिक रोडमैप तैयार करना और युवा प्रवासियों को शामिल करना शामिल है, जिनके नवीन विचार और वैश्विक अनुभव भारत के विकास लक्ष्यों में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इन संबंधों को मजबूत करने से एक उज्ज्वल, अधिक जुड़े हुए भविष्य का निर्माण करने में मदद मिलेगी। सहयोग और साझा उद्देश्य के माध्यम से, हम वर्ष 2047 तक एक जीवंत और समृद्ध भारत को प्राप्त करने के लिये अपने वैश्विक समुदाय की शक्ति का उपयोग कर सकते हैं।





दिव्यदर्शी पथप्रदर्शक : सर रतन टाटा (लोकोपकार एवं समाज कल्याण)

श्री पुरुषोत्तम गिरि

वरिष्ठ अनुवादक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

टाटा समूह के पूर्व चेयरमैन रतन टाटा ने समूह को विश्वव्यापी ताकत में परिवर्तन करने में निर्णायक भूमिका निभाई जिससे उद्योग और समाज दोनों पर स्थायी प्रभाव पड़ा। उनकी परिवर्तनकारी नेतृत्व शैली सर्वविदित है। व्यवसाय और परोपकार संबंधी कार्यों में उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियां हैं।

- वर्ष 1961 में अपने कैरियर की शुरुआत में उन्होंने जमशेदपुर स्थित टाटा स्टील के शॉप फ्लोर पर कार्य करते हुए प्रारंभिक स्तर से शुरुआत की। उनके नेतृत्व में कंपनी की इस्पात, ऑटोमोबाइल, सूचना प्रौद्योगिकी और आतिथ्य जैसे विभिन्न क्षेत्रों में विस्तार के साथ विस्तीर्ण संवृद्धि संभव हुई।
- सर रतन टाटा के नेतृत्व के अंतर्गत प्रमुख उपक्रमों एवं युक्तिपूर्ण अर्जन के माध्यम से टाटा समूह का भारत देश के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण विस्तार हुआ:
- टाटा इंडिका (वर्ष 1998): टाटा मोटर्स ने टाटा इंडिका पेश की जो भारत की देशज रूप से डिजाइन की गई पहली कार थी। इससे भारतीय ऑटोमोटिव उद्योग में एक बड़ा परिवर्तन आया।
- टाटा नैनो (वर्ष 2008): टाटा ने 1 लाख रुपये की कीमत वाली टाटा नैनो के लॉन्च के साथ भारत के मध्यम वर्ग के लिए वहनीय कारें निर्मित करने की परिकल्पना को सिद्ध किया। इस नवप्रवर्तन का उद्देश्य भारत के लाखों परिवारों के लिए वाहन का क्रय करना सुलभ बनाना था।
- वैश्विक अधिग्रहण: उनके नेतृत्व में टाटा समूह ने कई उच्च-स्तरीय वैश्विक अधिग्रहण किए जिनमें शामिल हैं:
- यूनाइटेड किंगडम की टेटली चाय, जगुआर लैंड रोवर एवं कोरस स्टील का स्वामित्व भी अर्जित किया गया।

सर रतन टाटा का योगदान मात्र कॉर्पोरेट जगत तक ही सीमित नहीं था। उनकी परोपकार और समाज कल्याण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता थी और परोपकारी कार्यों के लिए वह टाटा समूह के लाभ अर्जन के एक महत्वपूर्ण भाग का संदान किया करते थे।

- टाटा ट्रस्ट्स: उनके नेतृत्व में भारत के सबसे बड़े परोपकारी संगठनों में से एक टाटा ट्रस्ट्स द्वारा समूह के लाभ का 65% अंशदान, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और ग्रामीण विकास पर केंद्रित उपक्रमों के लिए किया गया।
- कोविड-19 राहत: वर्ष 2021 में टाटा ने कोविड-19 महामारी की रोकथाम करने की दिशा में भारत के प्रयासों में सहायता प्रदान करने हेतु 500 करोड़ रुपये का दान दिया जो संकट के समय में राष्ट्रीय कल्याण के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- वैश्विक परोपकार: टाटा की उदारता विश्व स्तर पर व्याप्त है और उन्होंने अपनी मातृ संस्था हार्वर्ड बिजनेस स्कूल में एक कार्यकारी केंद्र की स्थापना हेतु 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर का दान भी किया, जो दर्शाता है कि भावी पीढ़ियों को सक्षम बनाने की दिशा में एवं शिक्षा की क्षमता में उनका सुदृढ़ विश्वास था।
- स्वास्थ्य सेवा पहल: टाटा ने कोलकाता में टाटा मेडिकल सेंटर की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी जो एक विश्व स्तरीय सुविधा है और विशेष रूप से अल्पसुविधा प्राप्त समुदायों को वहनीय कैंसर उपचार प्रदान करती है।
- वर्ष 2008 के मुंबई में हुए आतंकवादी हमलों के बाद टाटा ने पीड़ितों और उनके परिवारों की सहायता के लिए ताज पब्लिक सर्विस वेलफेयर ट्रस्ट की भी स्थापना की।

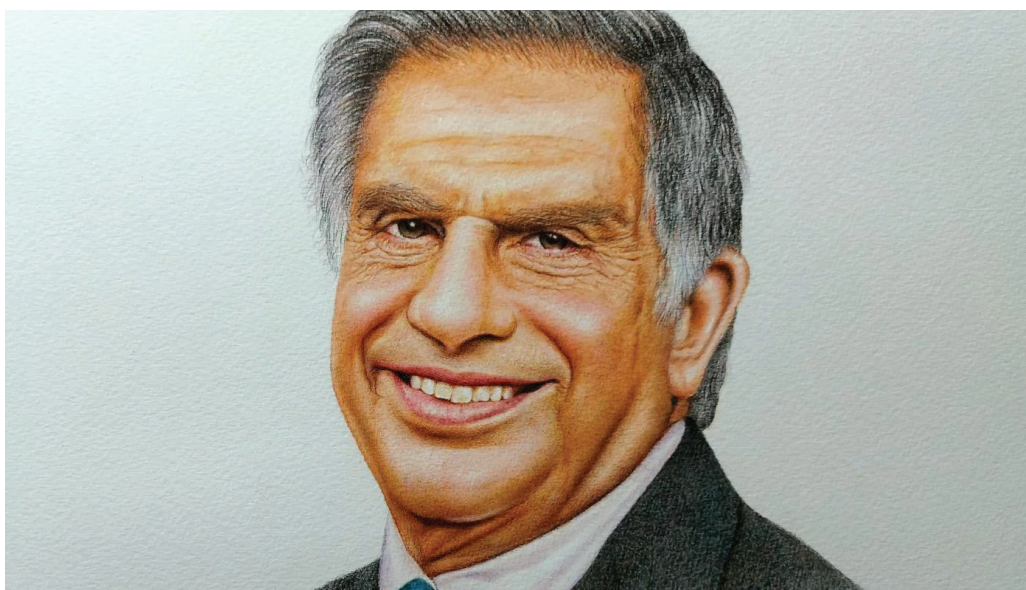
- पशु कल्याण: सर रतन टाटा आजीवन पशु कल्याण के पक्षधर रहे। टाटा समूह के मुख्यालय, बॉम्बे हाउस में उन्होंने सुनिश्चित किया कि आवारा पशुओं को अच्छी तरह से सुसज्जित केनेल (श्वानशाला) की सुविधा मिले और परिसर में उनका स्वतंत्र आवागमन सुनिश्चित हो।
- उनकी अंतिम बड़ी पहल वर्ष 2024 के मध्य में मुंबई में एक अत्याधुनिक पशु अस्पताल स्थापित करना था जो 24/7 आपातकालीन देखभाल प्रदान करता है।

चिरस्थायी विरासत:

सर रतन टाटा की विरासत दिव्यदर्शी नेतृत्व, व्यवसाय की परिवर्तनकारी कार्य नीतियाँ और समाज के प्रति अविचल उत्तरदायित्व द्वारा अभिलक्षित होती है। उनके अभिनव विचारों और परोपकारी प्रयासों के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज दोनों पर एक स्थायी प्रभाव पड़ा। व्यावसायिक सफलता और समाज कल्याण के बीच संतुलन स्थापित करने का उनका दृष्टिकोण संबद्ध क्षेत्र की भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

पुरस्कार एवं सम्मान

वर्ष	पुरस्कार	पुरस्कार प्रदाता
2000	पद्म भूषण	भारत सरकार
2007	कार्नेगी मेडल ऑफ फिलान्थ्रॉपी	कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस
2008	पद्म विभूषण	भारत सरकार
2008	ऑनरी सिटिजन अवॉर्ड	सिंगापुर सरकार
2023	उद्योग रत्न	महाराष्ट्र सरकार
2023	ऑनरी ऑफिसर ऑफ द ऑर्डर ऑफ ऑस्ट्रेलिया	किंग चार्ल्स तृतीय



"दूसरों के साथ अपने व्यवहार में दया,
सहानुभूति और करुणा की शक्ति को
कभी कम मत समझिए।"



प्राचीन लिंगराज मंदिर

श्री राहुल कुमार वर्मा

(कनि. अनुवादक)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

भुवनेश्वर, ओडिशा का सबसे बड़ा नगर तथा ओडिशा राज्य की राजधानी है। यह पूर्वी भारत का आर्थिक एवं सांस्कृतिक केंद्र होने के साथ साथ प्रमुख धार्मिक केंद्र भी है। यह नगर ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। तीसरी शताब्दी ईसापूर्व में यहाँ प्रसिद्ध कलिंग युद्ध हुआ था। इसी युद्ध के परिणामस्वरूप सम्राट अशोक, चंड(निर्दयी) अशोक से अशोक महान बने और एक लड़ाकू योद्धा से विनम्र बौद्ध में परिणित हो गए।

भुवनेश्वर शहर को अपने धार्मिक क्रियाकलापों एवं प्राचीन मंदिरों के कारण पूर्वी भारत का काशी भी कहा जाता है। यहाँ पर मंदिरों की संख्या अधिक होने के कारण मंदिरों का शहर (City of Temples) भी कहा जाता है।

सैंकड़ों वर्षों से यह शहर पूर्वोत्तर भारत में शैव सम्प्रदाय का प्रमुख केंद्र रहा है। माना जाता है कि मध्ययुग में यहाँ सात हजार मंदिर थे जिनमें से वर्तमान में लगभग 500 मंदिर ही शेष बचे हैं। भुवनेश्वर शहर में स्थित प्राचीनतम मंदिरों में से एक है यहाँ का प्रसिद्ध लिंगराज मंदिर। माना जाता है कि भुवनेश्वर शहर का नाम भगवान शिव के नाम पर ही पड़ा है। भगवान शिव को भुवनेश्वर और माता पार्वती को भुवनेश्वरी कहा जाता है। यह मंदिर मुख्य रूप से त्रिभुवनेश्वर भगवान शिव को समर्पित मंदिर है। लेकिन इस मंदिर का विशेष महत्व इसलिए भी है कि इस मंदिर में भगवान शिव के साथ भगवान विष्णु की भी पूजा की जाती है। इस प्रकार से यह मंदिर भारतीय सनातन धर्म के शैव और वैष्णवमत के सामंजस्य का केंद्र कहा जाता है।

इस मंदिर का निर्माण सोम वंशी राजा ययाति केसरी ने 11 वीं शताब्दी के आसपास में शुरू करवाया था। उन्होंने 11 वीं शताब्दी में अपनी राजधानी जाजपुर से भुवनेश्वर स्थानांतरित की थी। यद्यपि इस मंदिर का वर्तमान स्वरूप 12 वीं शताब्दी में राजा लालतेंदु केसरी के शासनकाल में सामने आया लेकिन इसके कुछ

हिस्से 1400 वर्षों से भी अधिक पुराने हैं तथा इस मंदिर का वर्णन छठी शताब्दी के लेखों में भी मिलता है। यह कलिंग शैली में बना हुआ मंदिर है। ये मंदिर जिस क्षेत्र में बना हुआ है उस स्थान का नाम ब्रह्मपुराण में एक्राम क्षेत्र के नाम से वर्णित है।

लिंगराज मंदिर का प्रांगण 150 मीटर के वर्गाकार क्षेत्र में फैला है। इसके कलश की ऊंचाई 40 मीटर है। प्रत्येक अप्रैल माह में यहाँ रथयात्रा का आयोजन होता है। मंदिर के निकट बिंदुसागर सरोवर है। प्राचीन मान्यता के अनुसार माना जाता है कि इस सरोवर में भारत के प्रत्येक पवित्र जलस्रोत का जल संगृहीत है और इस कारण से इस सागर में स्नान से मनुष्य अपने पापों से मुक्त होता है। धार्मिक मान्यता है कि देवी पार्वती ने इस स्थान पर लिट्टी तथा वसा नामक दो भयंकर राक्षसों का वध किया था। संग्राम के बाद जब माता पार्वती को प्यास लगी तो शिवजी ने यहाँ पर एक कुआँ बनाकर प्रत्येक पवित्र जलस्रोत और पवित्र नदियों का आवाहन किया था।

यह विश्व प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर पूर्वी भारत के मंदिरों में रचना, सौंदर्य तथा शोभा और अलंकरण की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। लिंगराज मंदिर अपनी अनुपम स्थापत्यकला के लिए भी प्रसिद्ध है। मंदिर में प्रत्येक शिला पर कारीगरी और मूर्तिकला का चमत्कार है।

इस मंदिर का शिखर भारतीय मंदिरों के शिखरों के विकास क्रम में आरंभिक अवस्था का शिखर माना जाता है। यह नीचे से तो सीधा और समकोण है किन्तु ऊपर पहुँचकर धीरे धीरे वक्र होता चला जाता है और शीर्ष पर गोलाकार हो जाता है। इसका शीर्ष चालुक्य मंदिरों के शिखरों पर बने छोटे गुम्बदों की भांति नहीं है। मंदिरों की दीवारों पर अत्यधिक सुंदर और कलात्मक नक्काशी की गई है। मंदिर के प्रत्येक पाषाण पर कोई ना कोई अलंकरण उत्कीर्ण है। स्थान-स्थान पर पशु पक्षियों से संबंधित

सुंदर मूर्तिकारी भी की गई है। मंदिर में चारों ओर सिंहों की उकेरी हुई मूर्तियाँ दिखाई देती हैं। गर्भगृह के अलावा जगमोहन तथा भोगमंडप में सुंदर सिंह मूर्तियों के साथ-साथ देवी देवताओं की कलात्मक प्रतिमाएँ भी हैं।

पूर्ण रूप से मंदिर को देखने पर मंदिर चारों ओर से लम्बी पुष्पमालाएँ या फूलों के मोटे गजरे पहने हुए प्रतीत होता है। मुख्य मंदिर के शिखर की ऊँचाई 180 फीट है।

मंदिर में भगवान शंकर के दोनों पुत्र श्री गणेश एवं श्री कार्तिकेय तथा माता पार्वती का मंदिर भी मुख्य मंदिर के विमान से संलग्न है। पार्वती मंदिर में माता पार्वती की प्राचीन काले पत्थर की मूर्ति है।

यहाँ की पूजा पद्धति के अनुसार सर्वप्रथम बिंदु सरोवर में स्नान किया जाता है फिर क्षेत्रपति अनंत बासुधैव के दर्शन किये

जाते हैं जिसका निर्माणकाल नवीं शताब्दी से दसवीं शताब्दी तक माना जाता है। गणेश पूजन के बाद शिवजी के वाहन नंदी के दर्शन के पश्चात् लिंगराज त्रिभुवनेश्वर भगवान शिव के दर्शन हेतु मुख्य स्थान में प्रवेश किया जाता है। तत्पश्चात् माता पार्वती के दर्शन करने एवं भोग पाने के बाद पूजा कार्य संपन्न होता है।

भुवनेश्वर शहर में महाशिवरात्रि के दिन विशेष समारोह होता है। इस दिन लिंगराज मंदिर में 24 घंटे पूरी विधि विधान से भगवान शिव की पूजा होती है। त्रिभुवनेश्वर भगवान शंकर के दर्शनार्थ पूरे भारतवर्ष से लोग आते हैं। भक्तगण उनकी भुवनेश्वर यात्रा के दौरान भारत के ऐसे अनोखे मंदिर जहाँ शिव और विष्णु एक साथ विराजमान हैं, में त्रिभुवनेश्वर भगवान शिव के साथ भगवान श्री हरि विष्णु के दर्शन कर अपना जीवन धन्य कर सकते हैं।





नारी का आदर

श्री गुप्त प्रसाद मिश्र

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेप-II)

भारत एक ऐसा देश है जहाँ महिलाओं को विभिन्न रूपों में पूजा जाता है। वह धन, शक्ति, शांति, शिक्षा आदि की देवी हैं। इसलिए यह सही कहा गया है कि “जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी”। हालाँकि, वास्तविक जीवन में क्या समाज उन्हें उचित सम्मान देता है? आइए उन तीन मामलों की जाँच करें जहाँ महिलाओं को गंभीर शारीरिक और मानसिक पीड़ा से गुजरना पड़ा।

कर्नाटक के एक ब्राह्मण परिवार की युवती अरुणा रामचंद्र शानबाग, पारंपरिक बाधाओं से बाहर आकर, किंग एडवर्ड मेमोरियल अस्पताल में नर्स के रूप में अपना करियर बनाने के लिए मुंबई आई थी। वह उसी अस्पताल के एक डॉक्टर से शादी करने वाली थी। हालाँकि, नियति ने उसके लिए कुछ बहुत ही क्रूर रखा था। 25 साल की उम्र में एक अस्पताल के चौकीदार ने उसका यौन उत्पीड़न किया। सात साल तक उसी अस्पताल में इलाज के बाद, जहाँ वह कभी काम करती थी, चिकित्सा अधिकारियों ने शानबाग को अस्पताल से बाहर ले जाने के लिए दो बार प्रयास किए ताकि बिस्तर खाली हो सके। जब अस्पताल की नर्सों ने शानबाग के समर्थन में विरोध प्रदर्शन शुरू किया, तो चिकित्सा अधिकारियों ने योजना छोड़ दी। हमले के अगले 41 वर्षों तक वह किसी वस्तु की अवस्था में रही, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक उत्तेजनाओं के प्रति अनुत्तरदायी। लंबे समय तक दर्दनाक पीड़ा के बाद उसने 2015 में अंतिम सांस ली।

उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के एक छोटे से गाँव से ताल्लुक रखने वाला एक निम्न-मध्यम वर्गीय परिवार बेहतर जीवन की तलाश में दिल्ली आ गया। परिवार में एक पिता, एक माँ, दो बेटे और एक बेटी थी। पिता अपने परिवार का भरण-पोषण करने और अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में भेजने के लिए डबल शिफ्ट (दो नौकरियाँ) में काम करते थे। बेटी जो पढ़ाई में काफी अच्छी थी, उसने देहरादून के साईं इंस्टीट्यूट ऑफ पैरामेडिकल एंड एलाइड साइंसेज से सफलतापूर्वक अपनी फिजियोथेरेपी स्नातक की पढ़ाई

पूरी की थी। वह दिल्ली के सेंट स्टीफंस अस्पताल में इंटर्न के तौर पर शामिल होने वाली थी। हालाँकि, 16 दिसंबर 2012 की दुर्भाग्यपूर्ण रात को चलती बस में छह लोगों के एक समूह ने उसके साथ यौन उत्पीड़न और बेरहमी से मारपीट की थी। पीड़िता 17 दिनों तक अस्पताल में संघर्ष करती रही और सिंगापुर के एक अस्पताल में उसकी मौत हो गई। यह कोई और नहीं बल्कि निर्भया कांड था जिसने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया था।

शैक्षणिक रूप से मजबूत हैदराबादी लड़की ने पशु चिकित्सा कॉलेज से डिग्री हासिल की थी। वह कोल्लूर गांव में सरकारी अस्पताल में पशु चिकित्सा सहायक सर्जन के रूप में काम कर रही थी। 27 नवंबर 2019 के दुर्भाग्यपूर्ण दिन शाम करीब 6.15 बजे एक टोल प्लाजा के पास अपनी स्कूटी खड़ी करने के बाद वह टैक्सी से त्वचा विशेषज्ञ के कार्यालय गई। इस बीच चार असामाजिक तत्वों ने स्कूटी का टायर पंचर कर दिया और उसके लौटने का इंतजार करने लगे। रात 9.15 बजे जब डॉक्टर वापस लौटी तो सहायता करने के बहाने वे उसे एक सुनसान जगह पर ले गए और उसके साथ यौन उत्पीड़न किया। बाद में उन्होंने उसकी हत्या कर दी और उसके शव को जला दिया। वह महिला कोई और नहीं बल्कि हैदराबाद की निर्भया थी।

इन तीनों मामलों में पीड़ितों का भविष्य उज्ज्वल था और वे अपने परिवार और समाज के लिए आगे चलकर अच्छा योगदान दे सकती थीं। देश भर में ऐसे सैकड़ों मामले हैं, जो किसी की नजर में नहीं आते। अब समय आ गया है कि समाज को यह सीखना चाहिए कि किसी को वस्तु न समझा जाए और यह सीख हर घर से मिलनी चाहिए। जो व्यक्ति मंदिर में भगवान के सामने सिर झुकाता है, उसे कम से कम अपने आस-पास की लड़कियों और महिलाओं के प्रति सहानुभूति और सम्मान का भाव तो दिखाना चाहिए। असहाय लोगों पर हमला करने की कारगरतापूर्ण हरकत करने के बजाय हमें उन्हें समाज में पनपने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि एक बेहतर राष्ट्र बन सके।



नारी: सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ कृति

सुश्री प्रियंका प्रधान

लेखापरीक्षक

कार्यालय-महालेखाकार (ले.प II), शाखा कार्यालय पुरी

महिला ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। उसकी रचनात्मकता, संवेदनशीलता, और शक्ति स्वयं ईश्वर द्वारा पूजनीय है। समय-समय पर महिलाओं की भूमिका, संघर्ष और कर्तव्यों को लेकर अनेक कहानियाँ, कविताएँ और ग्रंथ लिखे गए हैं। उम्र और परिस्थितियों के अनुसार एक स्त्री की जिम्मेदारियाँ बदलती रहती हैं, फिर भी वह अपने हर रूप में अद्वितीय होती है।

एक लड़की पुष्प की भाँति, इस संसार रूपी उपवन में जन्म लेती है, जिसमें अनगिनत संभावनाएँ निहित होती हैं। इसीलिए कहा जाता है- "लड़की एक फूल है।" वह दो परिवारों को जोड़ने वाली कड़ी होती है- एक पिता के घर में जन्म लेकर, ससुराल में अपनी नई जिम्मेदारियों को निभाते हुए, परिवार की जड़ें और भी मजबूत करती है। यह यात्रा फूल के बागीचे से मंदिर तक जाने जैसी पवित्र होती है, जिसमें प्रेम, स्नेह, और समर्पण की अनेक कहानियाँ समाहित होती हैं।

एक बेटी के रूप में वह अपने माता-पिता की सेवा करती है, एक बहन के रूप में स्नेह और सम्मान का पाठ पढ़ाती है और एक पत्नी तथा माँ के रूप में त्याग, प्रेम और शक्ति का प्रतीक बनती है। उसकी मुस्कान और शब्दों में रिश्तों की मिठास और सौहार्द की गहराई छिपी होती है। इसलिए वह न केवल अपने कुल का नाम रोशन करती है, बल्कि उसकी गरिमा भी बढ़ाती है।

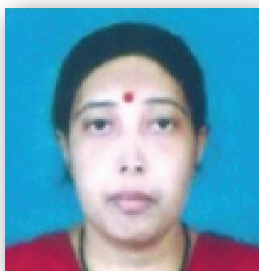
समाज में नारी की स्थिति

स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी समाज की मानसिकता में अपेक्षित बदलाव नहीं आ सका है। आज भी कई स्थानों पर कन्या जन्म को अवांछनीय समझा जाता है। उसे न केवल उपेक्षित किया जाता है, बल्कि कई बार उसके साथ अनुचित व्यवहार भी किया जाता है। यह विडंबना ही है कि जो सृजन की वाहक है, वही समाज में अनेक बाधाओं का सामना करती है।

लेकिन यह सच है कि नारी केवल भौतिक अस्तित्व तक सीमित नहीं है। उसने सिद्ध कर दिया है कि वह अंतरिक्ष की ऊँचाइयों तक उड़ सकती है, देश की बागडोर संभाल सकती है, बजट बना सकती है और राष्ट्र की रक्षा भी कर सकती है। वह कोमल भी है और समय आने पर दुर्गा का रूप भी धारण कर सकती है। इसलिए उसे कमजोर समझने की भूल न करें।

नारी सशक्त थी, है और सदैव रहेगी। हमें उसे समान अधिकार और सम्मान देकर एक समृद्ध समाज की नींव रखनी होगी।





भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO): कृषि में उपलब्धियाँ

सुश्री सुतापा सरकार

सहायक लेखापरीक्षक (कार्यालय स्थापना)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा II), ओडिशा, भुवनेश्वर

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO-1969) ने केवल अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में ही नहीं, बल्कि कृषि जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसरो की तकनीकों ने कृषि क्षेत्र में सुधार, संसाधनों के कुशल प्रबंधन और किसानों को सशक्त बनाने में अहम योगदान दिया है।

इसरो और कृषि क्षेत्र: मुख्य उपलब्धियाँ

1. फसल उत्पादन का अनुमान

इसरो ने सुदूर संवेदन (Remote Sensing) तकनीकों का उपयोग करके फसल उत्पादन के पूर्वानुमान लगाने की व्यवस्था विकसित की है। इसके तहत "फसल पूर्वानुमान प्रणाली" (Crop Forecasting System) तैयार की गई है जिसमें सेटेलाइट चित्रों का उपयोग कर फसलों की स्थिति और उत्पादन का सटीक अनुमान लगाया जाता है।

• राष्ट्रीय कृषि फसल पूर्वानुमान केंद्र (FASAL) :

इसरो के सहयोग से चलने वाला यह प्रोजेक्ट रबी और खरीफ फसलों की स्थिति उनकी बुवाई, और उत्पादन का पूर्वानुमान लगाने में मदद करता है।

2. भूमि उपयोग और जल संसाधन प्रबंधन

इसरो की सेटेलाइट तकनीक ने भूमि उपयोग की निगरानी और जल संसाधनों के प्रबंधन को सक्षम बनाया है।

• भूजल संसाधन प्रबंधन :

सेटेलाइट्स से प्राप्त आंकड़ों की मदद से जल संसाधनों की उपलब्धता और भूजल स्तर की निगरानी की जाती है। इससे सूखा प्रभावित क्षेत्रों में जल प्रबंधन की योजनाएँ बनाई जाती हैं।

• वाटरशेड डेवलपमेंट :

इसरो ने मिट्टी की नमी, जल निकासी और सिंचाई के लिए आदर्श क्षेत्रों की पहचान करने में मदद की है।

3. कृषि कीट और रोग प्रबंधन

सुदूर संवेदन तकनीक के माध्यम से फसलों पर लगने वाले कीटों और बीमारियों की पहचान करने और उन्हें रोकने के उपाय सुझाए जाते हैं। यह किसानों को फसल के नुकसान से बचाने और उत्पादकता बढ़ाने में मदद करता है।

4. जलवायु परिवर्तन और फसल पर प्रभाव

ISRO के उपग्रहों द्वारा एकत्रित आंकड़ों से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन किसानों को बदलते मौसम के अनुसार फसल योजना बनाने और उत्पादन बढ़ाने में मदद करता है।

5. ग्रामीण विकास कार्यक्रम

इसरो ने कृषि क्षेत्र में "राष्ट्रीय प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन प्रणाली" (NNRMS) जैसी योजनाएँ शुरू की हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और विकास से जुड़ी योजनाओं के लिए सटीक जानकारी प्रदान करती हैं।

6. सटीक कृषि (Precision Agriculture)

इसरो की GIS और GPS तकनीकें सटीक कृषि (Precision Agriculture) को संभव बनाती हैं। इन तकनीकों के माध्यम से खेतों की मिट्टी, जल और फसल की स्थिति की जानकारी प्राप्त कर कृषि गतिविधियों को बेहतर तरीके से प्रबंधित किया जाता है।

7. संबंधित मोबाइल एप्स और सेवाएँ

इसरो ने कई मोबाइल एप्स और सेवाएँ शुरू की हैं जो किसानों के लिए उपयोगी हैं:

- Bhuvan प्लेटफॉर्म: यह इसरो का एक जियोस्पेशियल पोर्टल है जो कृषि से संबंधित डेटा और जानकारी प्रदान करता है।
- मृदा स्वास्थ्य निगरानी: सैटेलाइट से प्राप्त डेटा के आधार पर मिट्टी की गुणवत्ता का विश्लेषण किया जाता है।

महत्वपूर्ण परियोजनाएँ और मिशन

1. FASAL परियोजना (Forecasting Agricultural Output using Space, Agro-Meteorology and Land-based Observations):

यह परियोजना कृषि उत्पादकता के पूर्वानुमान और फसल क्षेत्र निर्धारण के लिए शुरू की गई।

2. NAQUIM (National Aquifer Mapping and Management):

इसरो की इस योजना के तहत भूजल संसाधनों का मानचित्रण किया जाता है।

3. सुदूर संवेदन उपग्रह (IRS):

IRS श्रृंखला के उपग्रहों का उपयोग कृषि निगरानी, भूमि उपयोग और फसल स्वास्थ्य की जानकारी के लिए किया जाता है।

4. RISAT (Radar Imaging Satellite):

यह उपग्रह बादल के दौरान भी फसल निगरानी और आपदा प्रबंधन में मदद करता है।

कृषि में इसरो के योगदान के लाभ

1. किसानों के लिए सही जानकारी

इसरो की तकनीकें किसानों को मौसम, मिट्टी और जलवायु के बारे में सही जानकारी देती हैं जिससे वे बेहतर निर्णय ले सकते हैं।

2. फसल उत्पादन में वृद्धि

फसल की निगरानी और बेहतर प्रबंधन से कृषि उत्पादकता में सुधार हुआ है।

3. सूखा और बाढ़ का प्रबंधन

आपदा प्रबंधन के लिए सैटेलाइट डेटा का उपयोग करके समय पर राहत कार्य किए जाते हैं।

4. खर्च में कमी

सटीक कृषि तकनीक के कारण उर्वरक और पानी के उपयोग में कमी आई है।

निष्कर्ष

इसरो ने कृषि क्षेत्र में अपनी सैटेलाइट तकनीक और सुदूर संवेदन की मदद से कई क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। यह केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नहीं बल्कि भारत के लाखों किसानों की मदद करके ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में भी सहायक है। इसरो का योगदान यह साबित करता है कि वैज्ञानिक प्रगति का उद्देश्य समाज के हर वर्ग के जीवन को बेहतर बनाना है।



आलिया और रहस्यमयी बाग

सुश्री शुभलक्ष्मी महंती

पुत्री : श्री नित्यानन्द महंती, सहा. पर्य.

कार्यालय-महालेखाकार (ले.प II), शाखा कार्यालय पुरी

आलिया, एक उत्साही और जिज्ञासु लड़की, अपने छोटे से गाँव में अपनी दादी के साथ रहती थी। आलिया को किताबें पढ़ने और रहस्यमयी कहानियों में खोने का बहुत शौक था। एक दिन, वह अपने दादी के पुराने संदूक में छुपी हुई एक पुरानी किताब खोज लेती है। किताब का नाम था-"आलिया की अद्भुत यात्रा"। इस किताब को पढ़ते ही आलिया को महसूस होता है कि कुछ अजीब सा हो रहा है। किताब का हर पत्रा जैसे उसे किसी और दुनिया में खींच रहा था।

अचानक आलिया के सामने एक अजीब दरवाजा प्रकट होता है। यह दरवाजा एक पुराने बाग में था जिसके आसपास अजीब तरह के फूल और पेड़ थे। आलिया को यह सब बहुत रहस्यमयी लगता है और उसकी जिज्ञासा उसे अंदर जाने के लिए मजबूर करती है। जैसे ही आलिया उस दरवाजे से गुजरती है, वह एक नई और अद्भुत दुनिया में पहुँच जाती है। यह दुनिया रहस्यमयी बाग नामक जगह थी, जो न केवल रूप रंग-में, बल्कि समय स्थान से भी बिल्कुल अलग थी। बाग में कदम रखते ही आलिया देखती है कि यहाँ के पेड़, फूल और जानवर सब कुछ बोलते हैं। वहाँ एक मोर आलिया को देखकर बोलता है, "तुम यहाँ क्यों आई हो, छोटी लड़की!" आलिया चौंकते हुए जवाब देती है "मुझे तो नहीं पता, मैं तो बस एक किताब पढ़ रही थी और अचानक यहाँ आ गई।"

मोर हंसते हुए कहता है, "तुमने तो हमारी दुनिया में कदम रख लिया है। यहाँ हर व्यक्ति का एक राज होता है और तुमने जो दरवाजा खोला है, वह तुम्हारे भीतर के रहस्यों को उजागर करने के लिए है।"

आलिया को यह सब समझ में नहीं आता, लेकिन वह बाग की सुंदरता और रहस्यों से मोहित हो जाती है। वह बाग में आगे बढ़ती है और एक बड़े वृक्ष के नीचे बैठे हुए एक विचित्र महिला को देखती है, जिसका नाम माया था। माया उसे बताती है, "यह बाग तुम्हारी आंतरिक यात्रा का प्रतीक है। यहाँ हर चीज़ तुम्हारे भीतर छिपी हुई भावनाओं और विचारों का रूप है। तुम यहाँ से वह सब कुछ सीख सकोगी जो तुम्हें खुद के बारे में जानने के लिए चाहिए।"

आलिया को समझ में नहीं आता लेकिन माया उसे एक

छोटा सा कागज देती है जिस पर कुछ अजीब सा लिखा होता है : "जो अंदर की दुनिया को समझेगा, वही बाहर की दुनिया को बदल सकेगा"। आलिया सोचती है, "क्या यह सच हो सकता है"? फिर माया आलिया को एक झील के पास ले जाती है, जहाँ उसे एक बहुत सुंदर और विशाल कछुआ मिलता है, और वो कहता है, "यह झील तुम्हारे मन की गहराई है। तुम जैसे-जैसे इसमें उतरोगी, तुम्हारी असली पहचान सामने आएगी"।

आलिया डरते हुए झील में उतरने का फैसला करती है। जैसे ही वह पानी में कदम रखती है, उसे अचानक अजीब-सी आवाजें सुनाई देती हैं। वह आवाजें उसके भीतर की उन सारी चिंताओं और डर को दर्शा रही थीं, जिनसे वह अब तक भागती रही थी। लेकिन जैसे-जैसे वह झील में गहराई में जाती है, उसे महसूस होता है कि इन डर और चिंताओं को अपनाने से वह ज्यादा मजबूत महसूस करने लगती है।

जब वह झील के सबसे गहरे हिस्से तक पहुँचती है, तो उसे अपनी असली ताकत का एहसास होता है वह खुद को पहचानने लगती है। वह अब जानती है कि उसके भीतर जो डर और शंका थी वे केवल उसके विचार थे और जब वह इनसे पार पा सकती है तो कोई भी रोक नहीं सकता।

जब आलिया झील से बाहर आती है, वो समझ जाती है कि यह बाग एक रूपक था, जो उसके भीतर के विचारों और भावनाओं का प्रतीक था। अब वह जानती थी कि अगर वह अपने डर और असुरक्षाओं को समझे तो वह किसी भी चुनौती का सामना कर सकती है। इस यात्रा ने उसे आत्मविश्वास और आत्म-जागरूकता दी।

जैसे ही आलिया बाग से बाहर निकलने का मन बनाती है, वह फिर से उसी दरवाजे के पास पहुँच जाती है, जिससे वह आई थी। वह दरवाजा धीरे से बंद होता है और आलिया अपने घर लौट आती है और तभी आलिया को एहसास होता है कि वह एक सपना था लेकिन वह यह नहीं जानती थी कि इस अद्भुत यात्रा ने उसे जीवन के कुछ तथ्यों को सीखा दिया था।



कबीरदास

श्रीमती दीपिका चटर्जी

कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय-महालेखाकार (ले.प II)

भारतीय इतिहास में कबीरदास जी एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने शताब्दियों की सीमा का उल्लंघन कर भारतीय जनता के मार्ग को आलोकित किया और सच्चे अर्थों में भारत के जननायक कहलाये, साथ ही हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने दोहों द्वारा तत्कालीन समाज में व्याप्त अंधविश्वास, सम्प्रदायिकता, कुसंस्कार के ऊपर कठोर प्रहार किया तथा अपनी वाणी से समाज को मार्ग दिखाया।

कबीर निर्गुण सम्प्रदाय के मानने वाले थे। कबीर के राम निर्गुण निराकार ब्रह्म हैं। इनके दोहे धरमदास के “कबीर सागर” में पाए जाते हैं। कबीरदास का जन्म 8 जून 1398 को वाराणसी शहर में हुआ था एवं मृत्यु 1518 ई को मगहर शहर में। उन्होंने सभी धर्मों के निरर्थक और अनैतिक प्रथाओं पर सवाल उठाया।

**“माला फेरत जुग गया, फिरा न मन का फेर,
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।”**

कहकर मनुष्य को अपने मन को स्वच्छ करने का उपदेश दिया तो

**“जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान,
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।”**

कहकर जातिवाद पर कटाक्ष किया और व्यक्ति को पहचान उसकी जाति से नहीं बल्कि उसके ज्ञान से करने की सलाह दी। इस तरह के अनेकों दोहों द्वारा उन्होंने समाज को मार्ग दिखाया।

**“पोथी पढ़ि -पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का ,पढ़े सो पंडित होय।”**

कबीरदास जी इस दोहे के माध्यम से कहते हैं कि लोग ज्ञान हासिल करने के लिए नाना प्रकार की पुस्तक पढ़ते हैं और हृदय में अहंकार पालते हैं परंतु सच्चे अर्थों में वे पंडित नहीं बन

पाते। सच्चे अर्थों में पंडित वही बनता है जो प्रेम के सच्चे अर्थ समझता है और मनुष्य मात्र के प्रति प्रेम करता है।

सहजता उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी शोभा और कला की सबसे बड़ी विशेषता है। उनके काव्य का आधार सहानुभूति जो यथार्थ है, उन्होंने स्पष्ट कहा है-

“मैं कहता आखन की देखी, तू कहता कागद की लेखी”

उनके व्यक्तित्व का पूरा प्रतिबिंब उनके साहित्य में विद्यमान है। सत्य तो यह है कि काव्यरचना उनके साध्य या लक्ष्य नहीं था फिर भी अपने महान संदेशों की अभिव्यक्ति के लिए उन्हें काव्य को माध्यम बनाना पड़ा। ऐसे महान साधक, कवि समाज सुधारक को हमारा शत शत नमन।





डिजिटल अर्थव्यवस्था : एक समताकारी अथवा आर्थिक असमता का स्रोत

सुश्री स्निग्धा सेठी

पुत्री : श्री स्वाधीन कुमार सेठी, स.ले.प.अ
कार्यालय-महालेखाकार (ले.प II), शाखा कार्यालय पुरी

डिजिटल अर्थव्यवस्था, जिसमें वस्तुओं और सेवाओं की सुपुर्दगी प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग शामिल है, से वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। किंतु इससे आर्थिक असमता भी बढ़ी है जो कि चिंता का विषय है।

डिजिटल अर्थव्यवस्था भौगोलिक अवस्थिति और भौतिक अवसंरचना की आवश्यकता समाप्त कर, व्यवसायों और व्यक्तियों को वैश्विक बाजार में कहीं से भी सक्रिय होने की अनुमति देती है। इससे विकासशील क्षेत्रों के लघु व्यवसाय और बड़ी उद्यमी कंपनियों से प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। Amazon, Alibaba और Etsy ने उसे संभव बनाया है।

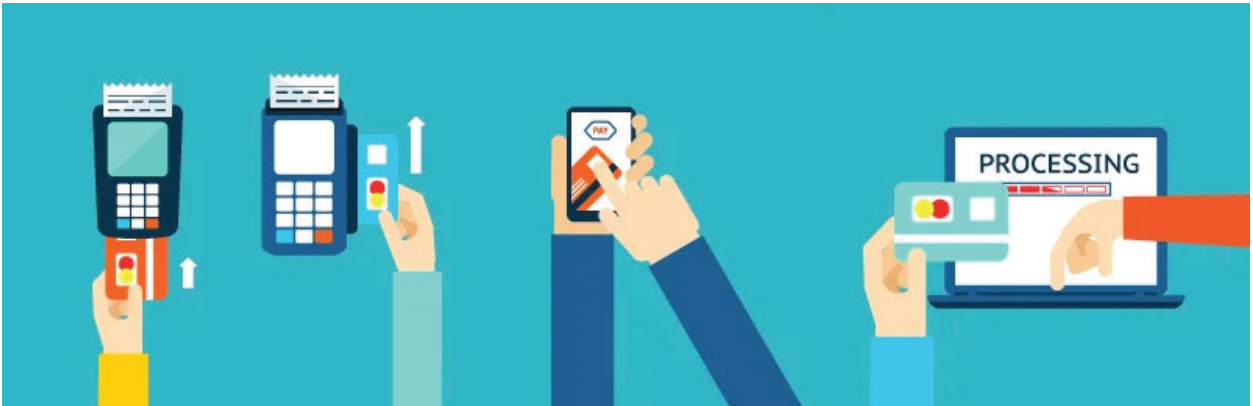
भारत के डिजिटल पहचान कार्यक्रम, आधार और यूनिकाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) से वित्तीय सेवाओं तक पहुँच में क्रांति आई है। जिससे बैंक खाते खोलना और डिजिटल भुगतान संभव हुआ है। फ्लिपकार्ट (Flipkart) और स्नैपडील (Snapdeal) ने लघु व्यवसायों को बड़े बाजारों में प्रतिस्पर्धा के साधन और बुनियादी ढाँचा प्रदान किया है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म ने शिक्षा, कृषि और श्रम बाजार में क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। डिजिटल शिक्षा और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रतिस्पर्धा को सुलभ बनाया है।

फ्रीलांसिंग प्लेटफॉर्म ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में नए अवसर उत्पन्न किए हैं। आधार (Aadhar), UPI और ONDC ने वित्तीय सेवाओं की पहुँच में सुधार किया है।

किंतु डिजिटल अर्थव्यवस्था की असमान पहुँच आर्थिक असमता बढ़ा सकती है विशेषकर ग्रामीण और निम्न आय वाले क्षेत्रों में जहाँ हाई-स्पीड इंटरनेट सीमित है। कई सारी प्रमुख कंपनियों का प्रभुत्व असमता बढ़ाता है, जिससे लघु व्यवसायों की प्रतिस्पर्धा प्रभावित होती है। डिजिटल अर्थव्यवस्था में श्रम बाजार का ध्रुवीकरण असमता बढ़ाता है, जिससे अर्धकुशल श्रमिक (semi skilled) और AI तकनीकों के कारण बेरोज़गार हो जाते हैं।

डिजिटल अर्थव्यवस्था की असमता को कम करने के लिए नीतियाँ लागू करनी चाहिए। विशेष रूप से वंचित क्षेत्रों में डिजिटल विभाजन को कम करना और डिजिटल बुनियादी ढाँचे में निवेश महत्वपूर्ण है। बड़ी कंपनियों के प्रभुत्व को विनियमित करने और गिग इकॉनमी श्रमिकों की रक्षा के लिए नीतियाँ आवश्यक हैं। इसकी सफलता के लिए असमता को कम करने के उपाय और समावेशी नीतियाँ आवश्यक हैं।





छद्म नारीवाद: एक विचारणीय विषय

सुश्री निधि प्रिया

लेखा परीक्षक (कार्यालय स्थापना)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा II)

नारीवाद (फेमिनिज्म) का मूल उद्देश्य स्त्रियों को समान अधिकार दिलाना, उनके सम्मान और गरिमा की रक्षा करना, और उन्हें समाज में पुरुषों के बराबर खड़ा करना है। यह आंदोलन महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और उनकी स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए बनाया गया था। लेकिन आज के समय में नारीवाद के इस पवित्र विचार को विकृत रूप में देखा जा रहा है, जिसे हम "छद्म नारीवाद" कहते हैं।

छद्म नारीवाद का अर्थ उस विचारधारा से है, जो नारीवाद की आड़ में केवल स्त्रियों को विशेषाधिकार दिलाने, पुरुषों को नीचा दिखाने या उनके अधिकारों का दमन करने की वकालत करती है। यह एक प्रकार का विकृत और अतिवादी रूप है, जो न केवल नारीवाद के मूल सिद्धांतों के विपरीत है बल्कि समाज में नई समस्याओं को जन्म देता है।

नारीवाद और छद्म नारीवाद में अंतर

नारीवाद का उद्देश्य समानता है, जबकि छद्म नारीवाद विशेषाधिकार की मांग करता है। नारीवाद स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान अवसर और अधिकार सुनिश्चित करता है। दूसरी ओर, छद्म नारीवाद का झुकाव अक्सर पुरुषों के खिलाफ आक्रामकता और स्त्रियों के पक्ष में असंवेदनशील लाभ लेने की ओर होता है।

उदाहरण के लिए:

1. समानता बनाम विशेषाधिकार

नारीवाद का सिद्धांत है कि स्त्रियों को समान वेतन, शिक्षा और सम्मान मिले। लेकिन छद्म नारीवाद के समर्थक केवल महिलाओं को लाभ पहुंचाने के लिए विशेष कानून या नियम बनाने की वकालत करते हैं, चाहे वे परिस्थितियां किसी के भी लिए अनुचित क्यों न हों।

2. जेंडर न्यूट्रलिटी की अनदेखी

छद्म नारीवाद के कारण कई बार पुरुषों के साथ अन्याय होता है। जैसे कि घरेलू हिंसा के मामलों में अक्सर यह माना जाता है कि केवल महिलाएं पीड़ित होती हैं, जबकि सच्चाई यह है कि कई बार पुरुष भी पीड़ित होते हैं।

3. मीडिया और सोशल मीडिया का प्रभाव

छद्म नारीवाद के प्रभाव को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर खूब देखा जा सकता है। किसी पुरुष के किसी बयान या हरकत को गलत तरीके से पेश कर उसे समाज का दुश्मन बना देना, बिना सच्चाई जाने आरोप लगाना, और फिर 'कैसिल कल्चर' के माध्यम से उसे हानि पहुंचाना, छद्म नारीवाद के ही लक्षण हैं।

छद्म नारीवाद के उदाहरण

1. सोशल मीडिया अभियानों का दुरुपयोग

हाल के वर्षों में #MeToo आंदोलन जैसे अभियानों ने महिलाओं के उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन कुछ उदाहरण ऐसे भी हैं जहां इस आंदोलन का दुरुपयोग किया गया। बिना सत्यापन के किसी पुरुष पर गंभीर आरोप लगाना और उनका करियर और जीवन बर्बाद करना, छद्म नारीवाद का उदाहरण है।

2. फर्जी मामलों का बढ़ना

भारत में दहेज उत्पीड़न से जुड़े कानूनों का कई बार गलत उपयोग हुआ है। कई मामलों में देखा गया है कि महिलाओं ने व्यक्तिगत प्रतिशोध के लिए इन कानूनों का इस्तेमाल कर निर्दोष पुरुषों और उनके परिवारों को झूठे मामलों में फंसाया।

3. कामकाज के माहौल में असमानता

कुछ जगहों पर यह धारणा बन गई है कि महिलाओं की शिकायतों को बिना जांच के ही सही मान लिया जाता है। इसका नतीजा यह होता है कि पुरुष कर्मचारियों को अपने कार्यस्थल पर असुरक्षित महसूस होता है।

4. पुरुषों की भावनाओं की अनदेखी

कई बार पुरुषों की समस्याओं को केवल इस आधार पर अनदेखा किया जाता है कि वे पुरुष हैं। जैसे मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों में पुरुषों की भावनाओं को गंभीरता से नहीं लिया जाता।

ऐतिहासिक संदर्भ और नारीवाद की यात्रा

नारीवाद का इतिहास तीन मुख्य चरणों (वेक्स) में बंटा हुआ है:

1. प्रथम लहर (19वीं और 20वीं सदी)

यह आंदोलन महिलाओं को मतदान का अधिकार और शिक्षा के अवसर दिलाने के लिए था। ब्रिटेन और अमेरिका में इस लहर ने महिलाओं को समान राजनीतिक अधिकार दिलाने का प्रयास किया।

2. द्वितीय लहर (1960-1980)

इस आंदोलन में महिलाओं के प्रजनन अधिकार, रोजगार में समानता, और घरेलू जिम्मेदारियों में समानता की मांग की गई।

3. तृतीय लहर (1990 के बाद)

यह आंदोलन अधिक समावेशी था और इसमें सभी वर्गों की महिलाओं की समस्याओं को शामिल किया गया।

छद्म नारीवाद का उभार

20 वीं सदी के अंत और 21वीं सदी की शुरुआत में नारीवाद की लोकप्रियता बढ़ी। इसी समय छद्म नारीवाद का चलन भी शुरू हुआ। इसके पीछे सोशल मीडिया और अतिवादी सोच का बड़ा हाथ रहा। कई बार यह देखा गया कि नारीवाद के नाम पर समाज में जेंडर के आधार पर वैमनस्य फैलाया गया।

छद्म नारीवाद के दुष्प्रभाव

1. पुरुषों के प्रति नफरत फैलाना

छद्म नारीवाद का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह है कि यह समाज में पुरुषों के प्रति नफरत फैलाता है। हर पुरुष को संभावित अपराधी के रूप में देखना और उनकी हर हरकत को शक की निगाह से देखना, समाज में असंतुलन पैदा करता है।

2. न्याय प्रणाली का दुरुपयोग

महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए बनाए गए कई कानूनों का छद्म नारीवाद की आड़ में दुरुपयोग किया जाता है। उदाहरण के तौर पर, दहेज विरोधी कानून या घरेलू हिंसा कानूनों का झूठे मामलों में उपयोग कर कई निर्दोष पुरुषों और उनके परिवारों को प्रताड़ित किया जाता है।

3. सच्चे नारीवाद को कमजोर करना

छद्म नारीवाद के कारण नारीवाद की सच्ची लड़ाई कमजोर पड़ती है। जब लोग छद्म नारीवाद के कारण नारीवाद को गलत समझते हैं, तो वे महिलाओं के वास्तविक मुद्दों पर ध्यान देने से कतराने लगते हैं।

4. समाज में विभाजन

छद्म नारीवाद के कारण महिलाओं और पुरुषों के बीच खाई

बढ़ती जा रही है। यह समाज में आपसी सहयोग और सामंजस्य के स्थान पर द्वेष और विभाजन पैदा करता है।

छद्म नारीवाद के कारण

1. अधूरी जानकारी

कई बार लोग नारीवाद के वास्तविक अर्थ को समझे बिना, उसके नाम पर अपनी व्यक्तिगत कुंठाओं को व्यक्त करने लगते हैं।

2. सोशल मीडिया का प्रचलन

सोशल मीडिया ने छद्म नारीवाद को बढ़ावा दिया है। किसी भी घटना को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना और उस पर एकतरफा राय देना, इसे बढ़ावा देता है।

3. अत्यधिक अतिवाद

कुछ लोग समाज में बदलाव लाने की चाह में अतिरेकी दृष्टिकोण अपनाते हैं, जिससे उनकी सोच नारीवाद से हटकर छद्म नारीवाद में परिवर्तित हो जाती है।

समाधान

1. सही शिक्षा और जागरूकता

नारीवाद और छद्म नारीवाद के बीच के अंतर को समझने और समझाने की जरूरत है। इसके लिए सही शिक्षा और जागरूकता आवश्यक है।

2. जेंडर न्यूट्रल कानून

न्याय प्रणाली को लिंग के आधार पर पक्षपातपूर्ण होने के बजाय निष्पक्ष और जेंडर न्यूट्रल बनाया जाना चाहिए।

3. सोशल मीडिया की जिम्मेदारी

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को अपनी भूमिका को जिम्मेदारी से निभाना चाहिए और फर्जी खबरों और अतिवादी विचारों को बढ़ावा देने से बचना चाहिए।

4. समानता पर ध्यान

समाज को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हर व्यक्ति, चाहे वह पुरुष हो या महिला, को समान अवसर और अधिकार मिलें।

निष्कर्ष

छद्म नारीवाद न केवल समाज में असमानता को बढ़ावा देता है, बल्कि नारीवाद के वास्तविक उद्देश्य को भी कमजोर करता है। हमें यह समझना होगा कि नारीवाद का अर्थ पुरुषों को नीचा दिखाना नहीं, बल्कि महिलाओं को समान अधिकार दिलाना है। सच्चे नारीवाद का समर्थन करते हुए, छद्म नारीवाद की पहचान करना और उसे हतोत्साहित करना आज के समाज की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।



सनातन धर्म

श्री शिबाशीष पाणिग्राही

स.ले.प.अ.,

कार्यालय-महालेखाकार (ले.प II), शाखा कार्यालय पुरी

"इतिहास" शब्द संस्कृत से लिया गया है, जिसका अर्थ है - "घटना का विवरण" या "भूतकाल की घटनाएँ।" सनातन धर्म में इतिहास का विशेष स्थान है। यह धर्मग्रंथों में उन घटनाओं, युद्धों, नीतियों और आदर्शों का वर्णन करता है, जो न केवल समाज के विकास में महत्वपूर्ण हैं बल्कि जो जीवन के आदर्शों को भी स्थापित करते हैं। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि हमारे पूर्वजों ने किस प्रकार अपने धर्म, संस्कृति और राष्ट्र की रक्षा के लिए संघर्ष किया और जीवन के सर्वोत्तम मार्गों का अनुसरण किया।

सनातन धर्म में इतिहास को दो प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है - महाभारत और रामायण। ये दोनों महाकाव्य न केवल धर्म के सिद्धांतों को स्पष्ट करते हैं बल्कि इनकी कथाएं जीवन के कर्तव्यों, नैतिकता और सामाजिकता को भी उजागर करती हैं।

1. रामायण: आदर्शों और कर्तव्यों का संगम

रामायण, संस्कृत के महान कवि वाल्मीकि द्वारा रचित एक महाकाव्य है। यह एक शास्त्र नहीं, बल्कि एक जीवंत इतिहास है जो हमें आदर्शों और कर्तव्यों की शिक्षा देता है। रामायण में भगवान श्रीराम के जीवन उनके आदर्शों, संघर्षों और विजय की कथा वर्णित है। राम के जीवन की घटनाओं में धार्मिक, नैतिक और सामाजिक आदर्शों का एक सुंदर मिलाजुला चित्रण मिलता है।

"रामायण" से हमें जीवन के कई महत्वपूर्ण पाठ मिलते हैं। कुछ प्रमुख शिक्षाएँ इस प्रकार हैं:

- धर्म का पालन :** श्रीराम का जीवन धर्म का पालन करने का आदर्श प्रस्तुत करता है। उन्होंने हमेशा सत्य, नैतिकता और न्याय का पालन किया, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी रही हों।
- कर्तव्य परायणता :** श्रीराम ने हमेशा अपने कर्तव्यों को प्राथमिकता दी, चाहे वह अपनी पत्नी सीता के लिए वनवास जाने का निर्णय हो या लंका पर चढ़ाई करना हो।
- समर्पण और भक्ति :** रामायण में भगवान राम के प्रति भक्ति और समर्पण की महानता को दर्शाया गया है, खासकर भक्त हनुमान की भक्ति और राम से उनके अनन्य प्रेम को।

- सहनशीलता और धैर्य :** रामायण में कई कठिनाइयों का सामना करते हुए भगवान राम ने हमेशा धैर्य और सहनशीलता दिखाई। यह हमें जीवन के कठिन क्षणों में संयम रखने की प्रेरणा देता है।
- मित्रता और सहयोग :** रामायण में भगवान राम और उनके मित्रों जैसे सुग्रीव, हनुमान और भरत के बीच सहयोग और एकजुटता का संदेश दिया गया है।

- सच्चे नेतृत्व के गुण:** रामायण हमें एक सच्चे नेता की परिभाषा सिखाता है, जो अपने प्रजा के भले के लिए काम करता है, जैसे भगवान राम ने किया।

"रामायण" न केवल धार्मिक ग्रंथ है बल्कि यह जीवन के हर पहलू में हमें मार्गदर्शन देने वाली एक अमूल्य धरोहर है।

रामायण का मुख्य संदेश है - धर्म का पालन। भगवान राम के जीवन का हर पहलू हमें यह सिखाता है कि व्यक्ति को चाहे जैसी भी कठिनाइयाँ आएँ, उसे अपने कर्तव्यों से कभी विमुख नहीं होना चाहिए। राम का वनवास, सीता का अपहरण और रावण का वध, सभी घटनाएँ धर्म, सत्य और न्याय के प्रति समर्पण का प्रतीक हैं। राम का आदर्श हमें यह सिखाता है कि जीवन में विपत्तियाँ आएँ तो भी हमें अपने कर्तव्यों से समझौता नहीं करना चाहिए।

2. महाभारत: धर्म और अधर्म का संघर्ष

महाभारत भी एक महत्वपूर्ण इतिहास है, जो सनातन धर्म का एक अभिन्न हिस्सा है। इसे संस्कृत के महाकवि महर्षि वेदव्यास जी के द्वारा रचा गया है। महाभारत की कथा कौरवों और पांडवों के बीच हुए युद्ध के इर्द-गिर्द घूमती है जो धर्म और अधर्म के संघर्ष का प्रतीक है। महाभारत का युद्ध केवल एक भौतिक युद्ध नहीं था बल्कि यह आत्मिक, मानसिक और नैतिक युद्ध भी था।

महाभारत का गीता भाग विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध के धर्म के बारे में उपदेश दिया। गीता में श्रीकृष्ण ने बताया कि कभी भी व्यक्ति को अपने धर्म से पीछे नहीं हटना चाहिए चाहे वह युद्ध हो या जीवन के अन्य संघर्ष। गीता का संदेश है कि हर व्यक्ति को अपने कर्तव्य

का पालन करना चाहिए और जीवन में सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए।

"महाभारत" एक महान भारतीय महाकाव्य है। यह काव्य न केवल एक युद्ध की कहानी है, बल्कि इसमें जीवन के विविध पहलुओं पर गहरी शिक्षाएँ दी गई हैं। "महाभारत" से हमें कई महत्वपूर्ण जीवन पाठ मिलते हैं। कुछ प्रमुख शिक्षाएँ निम्नलिखित हैं:

- i. **धर्म और अधर्म :** महाभारत हमें यह सिखाता है कि धर्म (नैतिकता) और अधर्म (अनीति) के बीच अंतर को समझना अत्यंत आवश्यक है। भीष्म पितामह, युधिष्ठिर और अर्जुन जैसे पात्र धर्म के पालन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं।
- ii. **कर्तव्य (धर्मपालन):** "महाभारत" में कर्तव्य का पालन करने की महिमा को प्रस्तुत किया गया है। युधिष्ठिर और अर्जुन ने अपने कर्तव्यों का पालन किया, चाहे परिस्थितियाँ कठिन क्यों न रही हों।
- iii. **सत्य की महत्ता:** महाभारत में सत्य बोलने की महिमा को प्रमुखता दी गई है। पांडवों ने अपनी पूरी कोशिश की कि वे सत्य के रास्ते पर चलें जबकि कौरवों ने गलत तरीके से सत्ता हासिल करने की कोशिश की।
- iv. **संघर्ष और जीवन की कठिनाइयाँ:** महाभारत में जीवन के संघर्षों और कठिनाइयों का सामना करने का संदेश दिया गया है। अर्जुन का धर्मसंकट, भीष्म पितामह का युद्ध में अपनी भूमिका निभाना और द्रौपदी का अपमान सभी जीवन के मुश्किल मोड़ों पर दृढ़ता से खड़ा होने की प्रेरणा देते हैं।
- v. **स्वधर्म का पालन:** महाभारत में स्वधर्म का पालन करने पर विशेष ध्यान दिया गया है। अर्जुन ने पहले युद्ध के मैदान में अपने कर्तव्यों पर विचार किया और श्रीकृष्ण ने उन्हें अपने धर्म का पालन करने के लिए प्रेरित किया जिससे "भगवद गीता" का आदान-प्रदान हुआ।
- vi. **सदाचार और नीति:** महाभारत में नीतिशास्त्र और सदाचार का बहुत महत्व है। कौरवों का अनैतिक व्यवहार और पांडवों का धर्म के मार्ग पर चलने का उदाहरण हमें जीवन में नैतिकता का पालन करने की प्रेरणा देता है।
- vii. **विश्वास और ईश्वर की भक्ति:** महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति और विश्वास का भी विशेष स्थान है। "भगवद गीता" में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जीवन के संघर्षों से पार पाने के लिए आत्मसमर्पण और भक्ति का महत्व समझाया।

"महाभारत" हमें जीवन के हर क्षण में नैतिकता, कर्तव्य, संघर्ष और सत्य के पालन की प्रेरणा देता है। यह काव्य हमें यह सिखाता है कि जीवन में सही मार्ग चुनना और उसका पालन करना ही सच्चा धर्म है।

महाभारत का इतिहास न केवल एक युद्ध का वर्णन करता

है बल्कि यह जीवन के विभिन्न पहलुओं - जैसे कर्तव्य, परिवार, राजनीति और धर्म पर भी गहरे विचार प्रदान करता है। यह युद्ध केवल बाहरी नहीं बल्कि भीतरी संघर्षों का भी प्रतीक है जो व्यक्ति को जीवन में अच्छे और बुरे के बीच चयन कर के अंतर को समझने की शक्ति देता है।

3. ऐतिहासिक घटनाएँ और उनके संदेश

इतिहास केवल युद्धों और संघर्षों की कहानी नहीं है बल्कि यह उस समय के समाज की स्थितियों और मान्यताओं का भी चित्रण करता है। इतिहास हमें यह सिखाता है कि कैसे मानव समाज ने धर्म, राजनीति और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को समझा और इनसे जुड़े सिद्धांतों को लागू किया।

भारत के इतिहास में विभिन्न राजवंशों का वर्णन मिलता है जिनकी नीतियाँ, युद्ध और सांस्कृतिक योगदान आज भी प्रासंगिक हैं। महाभारत और रामायण की घटनाएँ केवल कथा के रूप में न रहते हुए, समाज के प्रत्येक सदस्य के जीवन में आदर्श और नीति का पालन करने का मार्गदर्शन करती हैं। इन कथाओं में वर्णित घटनाएँ और पात्र हमें यह सिखाते हैं कि जीवन में धर्म, नैतिकता और सत्य का पालन सबसे ऊपर होना चाहिए।

4. इतिहास का उद्देश्य

इतिहास का मुख्य उद्देश्य केवल अतीत की घटनाओं का लेखा-जोखा रखना नहीं है बल्कि यह भी है कि वह आने वाली पीढ़ियों को इन घटनाओं से शिक्षा दे। इतिहास में छिपे उपदेश आज भी हमारे जीवन को मार्गदर्शन देने के लिए प्रासंगिक हैं।

जब हम इतिहास की घटनाओं को समझते हैं तो हम न केवल अतीत की अच्छाइयों और बुराइयों को पहचानते हैं बल्कि हम यह भी समझते हैं कि हम अपने वर्तमान और भविष्य को कैसे बेहतर बना सकते हैं। इतिहास हमें यह सिखाता है कि समाज की सशक्तिकरण और सर्वांगीण विकास के लिए हमें अपने आदर्शों और कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।

निष्कर्ष

"इतिहास" संप्रति धर्म का एक महत्वपूर्ण भाग है जो हमारे अतीत की घटनाओं, संघर्षों और आदर्शों को उजागर करता है। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य हमें न केवल धार्मिक शिक्षा देते हैं बल्कि जीवन के प्रति हमारी दृष्टि को भी बदलते हैं। संप्रति धर्म के इतिहास में हमें यह सिखने को मिलता है कि किस प्रकार हमारे पूर्वजों ने अपने धर्म, संस्कृति और समाज की रक्षा के लिए अपने कर्तव्यों का पालन किया और जीवन के सर्वोत्तम मार्गों पर चले। इतिहास के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि धर्म और सत्य का पालन करने से ही जीवन में वास्तविक शांति और सफलता प्राप्त होती है।



हर्ष और कृतज्ञता

श्रीमती रानी गिरि

पत्नी- श्री पुरुषोत्तम गिरि

वरिष्ठ अनुवादक

कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (ले.प. I)

मैं सोया और सपना देखा की जीवन आनंद है। मैं जागा और देखा कि जीवन सेवा है। मैंने काम किया और देखा, सेवा आनंद है

- रवींद्रनाथ टैगोर

कृतज्ञता को अक्सर किसी बड़ी भावना या किसी गहरी अर्थपूर्ण बात की गहरी स्वीकृति के रूप में दर्शाया जाता है, लेकिन मूलतः कृतज्ञता को मानवीय भावना के सबसे सरल रूप यानी हर्ष में व्यक्त किया जा सकता है। हर्ष को सकारात्मक अनुभवों और जुड़ाव के क्षणों के प्रति प्रत्यक्ष, शुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में समझकर, हम समझ सकते हैं कि यह कृतज्ञता को उसके शुद्धतम रूप में कैसे दर्शाता है।

हर्ष एक तात्कालिक, प्रायः स्वतःस्फूर्त, प्रसन्नता या आनंद की अनुभूति है। यह एक सार्वभौमिक भावना है जो सांस्कृतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत सीमाओं से परे है। आनंद के विपरीत, जिसे लंबे समय तक बनाए रखा जा सकता है और अक्सर एक व्यापक संदर्भ से जोड़ा जाता है।

हर्ष आमतौर पर क्षणिक होता है, जो विशिष्ट क्षणों या घटनाओं से उत्पन्न होती है। हर्ष/खुशी के ये क्षण ही कृतज्ञता की उपस्थिति को उसकी सबसे मौलिक अवस्था में प्रकट करते हैं।

कृतज्ञता में हमारे जीवन में अच्छाई को पहचानना और उसकी सराहना करना शामिल है। यह उन लाभों के प्रति सचेत स्वीकृति है जो हमें अन्य लोगों, प्रकृति या परिस्थितियों से प्राप्त होते हैं। कृतज्ञता शब्दों, कार्यों या विचारों के माध्यम से व्यक्त की जा सकती है, और इसमें हल्के संतोष से लेकर गहन प्रशंसा तक की भावनाएँ शामिल होती हैं। कृतज्ञता की सभी अभिव्यक्तियों में एक समान बात यह है कि हम किसी सकारात्मक बात को स्वीकार करते हैं जो हमारे जीवन को बेहतर बनाती है।

हर्ष और कृतज्ञता के बीच के संबंध के मूल में यह मान्यता है कि हर्ष अक्सर कृतज्ञता की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति होती है। जब हम हर्ष का अनुभव करते हैं, तो यह आमतौर पर इसलिए होता है क्योंकि हमने किसी ऐसी चीज या व्यक्ति का सामना किया है जो हमारे जीवन को समृद्ध बनाता है, भले ही वह क्षणिक ही क्यों न हो। समृद्धि की यह पहचान कृतज्ञता का एक मूलभूत पहलू है। उदाहरणतः उपहार प्राप्त करते समय बच्चे को जो खुशी महसूस होती है, वह देने वाले की दयालुता और विचारशीलता के लिये कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है। इसी तरह प्रकृति में हम जो आनंद अनुभव करते हैं, वह इसकी सुंदरता और शांति हेतु गहरी प्रशंसा को दर्शाता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, खुशी और कृतज्ञता आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई भावनाएँ हैं जो समग्र कल्याण में योगदान करती हैं। शोध से पता चला है कि जो व्यक्ति नियमित रूप से कृतज्ञता का अभ्यास करते हैं, वे जीवन में अधिक आनंद और संतुष्टि का अनुभव करते हैं। कृतज्ञता संबंधी अभ्यास जैसे कि कृतज्ञता संबंधी डायरी रखना, हर्ष सहित सकारात्मक भावनाओं को बढ़ाने में सहायक पाया गया है। इससे पता चलता है कि कृतज्ञता विकसित करने से हर्ष के तीव्र अनुभव हो सकते हैं।

सकारात्मक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक शाखा है जो सकारात्मक भावनाओं और लक्षणों के अध्ययन पर केंद्रित है, मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाने में हर्ष तथा कृतज्ञता के महत्व पर जोर देती है। सकारात्मक मनोविज्ञान के अनुसार, संतुष्टि एवं लचीलेपन की भावना को बढ़ावा देने हेतु हर्ष व कृतज्ञता दोनों ही आवश्यक हैं। हम जिस चीज के लिये आभारी हैं, उस पर ध्यान केंद्रित करके, हम स्वयं को अधिक आनंददायक अनुभवों का साक्षात्कार करते हैं एवं एक सकारात्मक प्रतिक्रिया लूप बनाते हैं जो हमारे समग्र कल्याण को बढ़ाता है।

हर्ष और कृतज्ञता के बीच के अंतर-संबंध में सचेतनता (Mindfulness) एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सचेतनता में वर्तमान क्षण में उपस्थित रहना तथा बिना किसी निर्णय के अपने विचारों, भावनाओं एवं परिवेश का पूर्णतः अनुभव करना शामिल है। सचेतनता का अभ्यास करने से हम अपने हर्ष में आनंद के स्रोतों के प्रति अधिक जागरूक हो जाते हैं व उनसे प्रेरित कृतज्ञता के प्रति अधिक सजग हो जाते हैं।

जब हम सचेत होते हैं तो हम उन छोटे-छोटे, रोजमर्रा के क्षणों पर अधिक ध्यान देते हैं जो हमें खुशी देते हैं। चाहे वह हमारी त्वचा पर सूर्य की गर्मी हो, स्वादिष्ट भोजन का स्वाद हो या किसी प्रियजन की मुस्कान हो, खुशी के ये क्षण कृतज्ञता का अभ्यास करने के अवसर हैं। वर्तमान और सजग रहकर हम इन क्षणों तथा इनसे मिलने वाले हर्ष की पूरी तरह सराहना कर सकते हैं एवं कृतज्ञता की हमारी भावना को सुदृढ़ कर सकते हैं।

विभिन्न संस्कृतियों और दार्शनिक परंपराओं ने लंबे समय से आनंद तथा कृतज्ञता के बीच संबंध को पहचाना है। कई आध्यात्मिक एवं धार्मिक प्रथाओं में, कृतज्ञता को आनंद व अधिक सार्थक जीवन का अनुभव करने के मार्ग के रूप में देखा जाता है। उदाहरणतः ईसाई धर्म में, कृतज्ञता अक्सर धन्यवाद देने की प्रार्थनाओं के माध्यम से व्यक्त की जाती है, जिसका उद्देश्य ईश्वर के आशीर्वाद के लिए एक हर्षित प्रशंसा विकसित करना है। इसी तरह बौद्ध धर्म में ध्यान और कृतज्ञता मुख्य अभ्यास हैं जो आनंदमय संतोष तथा ज्ञान की स्थिति की ओर ले जाते हैं।

दार्शनिक दृष्टि से, स्टोइक (Stoics) लोग कृतज्ञता को अच्छे जीवन का एक महत्वपूर्ण घटक मानते थे। उनका मानना था कि हमारे पास जो कुछ है उसे पहचानने और उसकी सराहना करने से, हम बाहरी परिस्थितियों की परवाह किये बिना, हर्ष तथा संतोष की भावना विकसित कर सकते हैं। यह दृष्टिकोण इस विचार से संबंधित है कि हर्ष कृतज्ञता का सबसे सरलतम रूप है, क्योंकि यह वर्तमान क्षण एवं उसमें निहित अच्छाई की सराहना से उत्पन्न होता है।

हर्ष और कृतज्ञता के बीच के संबंध को समझना हमारे दैनिक जीवन के लिये व्यावहारिक निहितार्थ हो सकता है। हर्ष के क्षणों को सचेत रूप से तलाशने तथा उनका आनंद लेने से हम कृतज्ञता की भावना को अधिक बढ़ा सकते हैं। इसे विभिन्न अभ्यासों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, जैसे कि नियमित

रूप से उन चीजों को लिखना जिनके लिये हम आभारी हैं, इससे हमें अपने जीवन के सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने व उनसे मिलने वाली हर्ष के बारे में हमारी जागरूकता बढ़ाने में मदद मिल सकती है। सचेतनता मेडिटेशन का अभ्यास करने से वर्तमान में उपस्थित रहने की हमारी क्षमता बढ़ सकती है और हम अपने जीवन में आनंद के स्रोतों की सराहना कर सकते हैं।

हर्ष और कृतज्ञता के बीच का संबंध दूसरों के साथ हमारे रिश्तों तक फैला हुआ है। जब हम दूसरों की उपस्थिति में खुशी का अनुभव करते हैं, तो इससे अक्सर हमारे रिश्ते मजबूत होते हैं तथा उन रिश्तों के प्रति हमारी कृतज्ञता की भावना गहरी होती है। परिवार के सदस्यों के साथ साझा किये गए खुशी के पल, जैसे उत्सव, छुट्टियाँ एवं रोजमर्रा की बातचीत, हमें मिलने वाले समर्थन व प्यार के प्रति कृतज्ञता की भावना उत्पन्न करता है।

मित्रों के साथ सुखद अनुभव, चाहे वे साझा गतिविधियों, वार्तालापों या आपसी सहयोग के माध्यम से हों, उनके द्वारा प्रदान की गई संगति और समझ के प्रति गहरी सराहना को बढ़ावा देते हैं। रोमांटिक रिश्तों में खुशी के पल, जैसे साझा हंसी, स्नेहपूर्ण हाव-भाव तथा सार्थक बातचीत, हमारे साथी के साथ भावनात्मक जुड़ाव एवं अंतरंगता के प्रति हमारी कृतज्ञता को बढ़ाते हैं।

समुदाय के भीतर आनंददायक अनुभव, जैसे सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेना, स्वयंसेवा करना या सामाजिक गतिविधियों में शामिल होना, हमारे आपसी सहयोग और अपनेपन की भावना के प्रति हमारी कृतज्ञता को सुदृढ़ करते हैं।

हमारे रिश्तों से मिलने वाली खुशी को पहचानकर और उसका महत्व समझकर, हम अपने जीवन में लोगों के प्रति कृतज्ञता की गहरी भावना विकसित कर सकते हैं। यह बदले में हमारे संबंधों को मजबूत करता है तथा हमारी समग्र खुशी और कल्याण में योगदान देता है।

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी, खुशी कृतज्ञता का एक शक्तिशाली रूप बन सकती है। चुनौतीपूर्ण अवधियों के दौरान, खुशी के क्षण हमें बहुत राहत प्रदान कर सकते हैं तथा हमारे जीवन में अभी भी मौजूद अच्छाई की याद दिला सकते हैं। यह बात उन परिस्थितियों में विशेष रूप से स्पष्ट होती है, जहाँ व्यक्ति को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, लेकिन वह छोटी-छोटी जीत, दयालुता के कार्यों या साधारण सुखों में खुशी महसूस होती है। उदाहरण के लिये जो व्यक्ति बीमारी या हानि सहते हैं, वे दूसरों

के सहयोग और करुणा से आनंद का अनुभव कर सकते हैं। यह खुशी, यद्यपि क्षणिक होती है परंतु उन्हें प्राप्त होने वाले प्रेम तथा देखभाल के प्रति गहन कृतज्ञता की भावना को प्रतिबिंबित करती है। इसी तरह कठिन आर्थिक समय में, लोग उदारता, सामुदायिक एकजुटता या व्यक्तिगत उपलब्धियों के कार्यों में खुशी का अनुभव कर सकते हैं, जो मानवीय भावना की लचीलापन एवं ताकत के लिये उनके आभार को उजागर करता है।

खुशी के इन क्षणों को पहचानकर और उन्हें अपनाकर, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी, हम कृतज्ञता की भावना बनाए रख सकते हैं जो हमें कठिन समय में भी सहारा देती है। यह दृष्टिकोण इस विचार से संबंधित है कि हर्ष कृतज्ञता का सबसे सरलतम रूप है क्योंकि यह चुनौतियों के बावजूद बनी रहने वाली अच्छाई की सराहना से उत्पन्न होती है।

हर्ष, अपने सरलतम रूप में, कृतज्ञता की तात्कालिक एवं प्रामाणिक अभिव्यक्ति है। यह हमारे जीवन के सकारात्मक पहलुओं की पहचान और सराहना से उत्पन्न होता है, चाहे वे गहन हों या सांसारिक। हर्ष तथा कृतज्ञता के बीच के जटिल संबंध को समझकर, हम बेहतर स्वास्थ्य व संतुष्टि की भावना विकसित कर सकते हैं।

सचेतनता, सकारात्मक चिंतन और कृतज्ञता के अभ्यास के माध्यम से हम अपने जीवन में खुशी का अनुभव करने तथा

अच्छाई की सराहना करने की अपनी क्षमता को बढ़ा सकते हैं। हमारे रिश्तों, अनुभवों एवं जुड़ाव के क्षणों से मिलने वाली खुशी को महत्त्व देकर, हम अपनी कृतज्ञता की भावना को गहरा कर सकते हैं व दूसरों के साथ अपने संबंधों को मजबूत कर सकते हैं।

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी, खुशी हमारे जीवन में विद्यमान लचीलेपन और अच्छाई की एक प्रबल याद दिलाती है। कृतज्ञता के सबसे सरलतम रूप के रूप में खुशी को अपनाकर, हम जीवन की चुनौतियों का सामना अधिक आशा, प्रशंसा और संतोष की भावना के साथ कर सकते हैं।

संक्षेप में, आनंद और कृतज्ञता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, जो एक दूसरे को बढ़ाते तथा मजबूत करते हैं। हर्ष की खोज करने एवं उसका आनंद लेने की मानसिकता को बढ़ावा देकर, हम कृतज्ञता की गहन व स्थायी भावना विकसित कर सकते हैं जो हमारे जीवन और हमारे आस-पास के लोगों के जीवन को समृद्ध बनाती है।

आइए हम उठें और आभारी रहें कि यदि हमने आज बहुत कुछ नहीं सीखा, तो कम-से-कम हमने थोड़ा बहुत सीखा।

- गौतम बुद्ध





भारत की सौर ऊर्जा क्रांति: नवीकरणीय ऊर्जा में अग्रणी

श्रीमती स्वप्नास्वरुपा पात्रा

पत्नी : श्री अमित कुमार प्रधान

वरिष्ठ लेखा परीक्षक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेप-I)

सौर नवाचारों के क्षेत्र में, प्रगति सूक्ष्म और अभूतपूर्व दोनों है। नैनोवायरों से सजे सौर पैनलों से लेकर खिड़कियों तक जो जादुई ढंग से प्रकाश को बिजली में बदल देती है, नवाचारों का स्पेक्ट्रम आशाजनक होने के साथ-साथ विविध भी है। पतले, लचीले सौर पैनल, पानी पर सौर फार्म और सौर पेंट अब वास्तविक आविष्कार हैं। ये नवाचार हमें ऐसे भविष्य के करीब लाते हैं जहां लगभग कोई भी चीज स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन कर सकती है।

सौर सिम्फनी में भारत की भूमिका

भारत केवल एक दर्शक के रूप में नहीं बल्कि वैश्विक सौर क्रांति में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में खड़ा है। भारत वर्तमान में सौर ऊर्जा क्षमता में विश्व स्तर पर चौथे स्थान पर है। पिछले पांच वर्षों में, देश की सौर स्थापित क्षमता में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है, जो 2023 में 21,651 मेगावाट से बढ़कर 70,096 मेगावाट हो गया है। उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन (पीएलआई) जैसे महत्वाकांक्षी लक्ष्यों और नीतियों के साथ, भारत 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता हासिल करने के लिए खुद को प्रेरित कर रहा है। प्रतिबद्धता केवल टिकाऊ ऊर्जा के प्रति नहीं है, बल्कि पूरे ग्रह के लिए एक हरित कल को सुरक्षित करने के प्रति है।

जैसे-जैसे हम 2025 में आगे बढ़ रहे हैं, सौर उद्योग की घटती लागत, उन्नत ऊर्जा भंडारण समाधान और ग्रिड प्रगति केंद्र में हैं। उद्योग में विकेंद्रीकरण, व्यापक रूप से अपनाने और सौर परियोजनाओं में वृद्धि देखी गई है, जो एक स्थायी ऊर्जा भविष्य के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। 2024 में कई वैश्विक रुझान रिपोर्ट से पता चलता है कि सौर ऊर्जा सिर्फ एक विकल्प नहीं बल्कि एक वैश्विक आवश्यकता बनती जा रही है।

सौर ऊर्जा के प्रति भारत सरकार की प्रतिबद्धता सिर्फ शब्दों में नहीं बल्कि व्यापक नीतियों और पहलों में है। घरेलू उत्पादन को

बढ़ावा देने के लिए 24,000 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ उच्च दक्षता वाले सौर पीवी मॉड्यूल में गीगा वाट (जीडब्ल्यू) पैमाने की विनिर्माण क्षमता प्राप्त करने के लिए उच्च दक्षता वाले सौर पीवी मॉड्यूल पर राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (पीएलआई) शुरू की गई है।

पीएलआई (ट्रेंच-I) के तहत 8737 मेगावाट की एकीकृत क्षमता जोड़ी गई है जबकि ट्रेंच-II के तहत 11 कंपनियों को 39,600 मेगावाट की घरेलू सौर पीवी मॉड्यूल विनिर्माण क्षमता आवंटित की गई है जिससे 93041 करोड़ रुपये का निवेश होगा और इससे अधिक उत्पादन होगा जिससे 1 लाख प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नौकरियाँ मिलेंगी।

सौर ऊर्जा के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित करने वाली एक और महत्वपूर्ण पहल सौर पार्क योजना है जिसे 2025-26 तक 38 गीगावाट की संचयी क्षमता के साथ 500 मेगावाट और उससे अधिक के 50 सौर पार्क स्थापित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। ये सौर पार्क सौर ऊर्जा उत्पादन के केंद्र के रूप में कार्य करते हैं, निवेश आकर्षित करते हैं और सौर ऊर्जा विकास के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देते हैं। वे बड़े पैमाने पर अर्थव्यवस्था हासिल करने, सौर ऊर्जा को अधिक किफायती और सुलभ बनाने में सहायक हैं। इस योजना के तहत अब तक 8521 मेगावाट की कुल क्षमता वाले 11 सौर पार्क पूरे हो चुके हैं और 3985 मेगावाट की कुल क्षमता वाले 7 सौर पार्क आंशिक रूप से पूरे हो चुके हैं। इन पार्कों में कुल 10,237 मेगावाट क्षमता की सौर परियोजनाएं विकसित की गई हैं।

पीएम-कुसुम जैसी योजनाएं - जिनका लक्ष्य मार्च 2026 तक 30.8 गीगावाट की सौर ऊर्जा क्षमता वृद्धि हासिल करना है - विकेंद्रीकृत सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना, कृषि डीजल पंपों को सौर कृषि जल पंपों से बदलने और मौजूदा ग्रिड से जुड़ी कृषि को

सौर ऊर्जा प्रदान करके भारत के कृषि क्षेत्र को बदल रही हैं। पंप योजना दिशानिर्देश स्वदेशी सौर सेल, मोटर पंप-सेट, नियंत्रक और सिस्टम के संतुलन के साथ स्वदेशी रूप से निर्मित सौर मॉड्यूल का उपयोग करना अनिवार्य बनाते हैं।

आवासीय क्षेत्र के लिए रूफटॉप सौर कार्यक्रम और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए ऑफ-ग्रिड सौर पीवी अनुप्रयोग कार्यक्रम भी सब्सिडी प्रदान करके सौर ऊर्जा को सुलभ बना रहे हैं। समर्थन सिर्फ वित्तीय नहीं है; यह सौर ऊर्जा से संचालित भविष्य में एक रणनीतिक निवेश है।

इसके अलावा, भारत के माननीय प्रधान मंत्री जी और फ्रांस के राष्ट्रपति द्वारा वर्ष 2015 में लॉन्च किया गया अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) इस बात का एक प्रमुख उदाहरण है कि कैसे सहयोगात्मक प्रयास दुनिया को स्वच्छ, हरित और अधिक की ओर ले जा सकते हैं। यह एक सदस्य-केंद्रित, सहयोगी मंच है जो वर्ष 2030 तक 450 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा बनाने के उद्देश्य से कार्रवाई पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य ऊर्जा पहुंच का विस्तार, ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना और इसके भीतर ऊर्जा संक्रमण को उत्प्रेरित करके सौर ऊर्जा प्रौद्योगिकियों को व्यापक रूप से अपनाना है। 20 विजेताओं के साथ, सोलरएक्स: ए स्टार्टअप चैलेंज अफ्रीका चैप्टर, आईएसए की एक पहल, अफ्रीका की बिजली चुनौतियों के लिए नवीन और किफायती सौर ऊर्जा समाधान भी ला रही है। आईएसए प्रौद्योगिकी और इसके वित्तपोषण की लागत को कम करके और सौर उद्योग कार्यबल के कौशल को बढ़ाकर 2030 तक \$ 1 ट्रिलियन निवेश को अनलॉक करने का प्रयास कर रहा है।

भारत का विज़न 2030 :

भारत का वर्ष 2030 का विज़न जलवायु परिवर्तन से लड़ने और ऊर्जा संक्रमण को सक्षम करने के लिए हरित विकास पर महत्वपूर्ण ध्यान देने के साथ नवीकरणीय ऊर्जा प्रभुत्व का एक मिश्रण है। COP26 में घोषित पंचामृत नीति से प्रेरित होकर, भारत ने नवीकरणीय क्रांति लाने के लिए निम्नलिखित दृढ़ लक्ष्य निर्धारित किए हैं:

- 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता
- 2030 तक अपनी ऊर्जा आवश्यकता का 50% नवीकरणीय स्रोतों से पूरा करना

- 2030 तक कुल अनुमानित कार्बन उत्सर्जन में 1 बिलियन टन की कमी लाना
- अपनी अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता को 45% से कम करना
- 2070 तक शुद्ध शून्य कार्बन वाला देश बनाना

2047 तक भारत का लक्ष्य विद्युत गतिशीलता, सीएनजी और पाइपड प्राकृतिक गैस, 20% इथेनॉल मिश्रण और हरित हाइड्रोजन उत्पादन के मिश्रण के माध्यम से एक ऊर्जा-स्वतंत्र राष्ट्र बनना है। देश का लक्ष्य अपनी 90% ऊर्जा नवीकरणीय स्रोतों से प्राप्त करना है।

केपीएमजी की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत को अपने स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों को पूरा करने के लिए 2030 तक सालाना 350-400 अरब डॉलर के निवेश की आवश्यकता होगी - जो वैश्विक निवेशकों के लिए एक संभावित अवसर है। भारत का ऊर्जा परिवर्तन संभावित रूप से 2030 तक लगभग 5-6 मिलियन नौकरियां पैदा कर सकता है, जो 2047 तक 9-10 मिलियन तक पहुंच सकता है।

2047 की ओर इस ऊर्जा स्वतंत्रता यात्रा में, उभरती हुई प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण है। भारत में एक सहायक नीति पारिस्थितिकी तंत्र, विनिर्माण क्लस्टर और एक अद्वितीय कौशल सेट द्वारा संचालित स्वच्छ प्रौद्योगिकी विनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता है। भारत उन उन्नत तकनीकों को अपनाने की इच्छा रखता है जो सभी के लिए सुरक्षित, किफायती और टिकाऊ ऊर्जा का वादा करती हैं।

सौर ऊर्जा उन्नति की संभावनाओं का दोहन आर्थिक और तकनीकी प्रगति से परे, सौर ऊर्जा उन्नति के पर्यावरणीय लाभों में शामिल हैं:

- जलवायु परिवर्तन को कम करना: सौर पैनल अपने कम पारिस्थितिक प्रभाव और न्यूनतम कार्बन पदचिह्न के माध्यम से जलवायु परिवर्तन को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।
- प्रदूषण में कमी: स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों की ओर संक्रमण से वायु और जल प्रदूषण में कमी आती है, जिससे एक स्वस्थ और टिकाऊ पर्यावरण को बढ़ावा मिलता है।

- ग्रह के भविष्य को सुरक्षित करना: सौर ऊर्जा के पर्यावरणीय लाभ प्रगति से परे हैं, जो एक स्थायी भविष्य सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।
- जैसे-जैसे भारत अपने महत्वाकांक्षी सौर लक्ष्यों की ओर बढ़ रहा है, निवेशकों के लिए अवसर प्रचुर मात्रा में नहीं हैं; वे भारत की सौर सफलता की कहानी का हिस्सा बनने का प्रवेश द्वार हैं। इसमें सौर परियोजनाओं में निवेश से लेकर विनिर्माण पहल का समर्थन करने तक के रास्ते शामिल हैं। एक मजबूत नीति ढांचे और सरकार के अटूट समर्थन के साथ, निवेशक आत्मविश्वास से सौर परिदृश्य में आगे बढ़ सकते हैं। भारत की सौर यात्रा सिर्फ विकास की यात्रा नहीं है; यह निवेशकों के लिए एक उज्ज्वल, सुनहरे भविष्य में भागीदार बनने का निमंत्रण है।

सौर ऊर्जा के सपनों को कायम रखना :

पीएलआई योजना घरेलू विनिर्माण, क्षमता बढ़ाने और भारत को एक सौर ऊर्जा केंद्र के रूप में आगे बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रोत्साहन का संकेत देती है। सौर पेंट और अंतरिक्ष-आधारित सौर पैनल जैसे नवाचारों के साथ भविष्य असीमित संभावनाओं के साथ सामने आता है।

भारत के सौर सपनों को बनाए रखने के लिए, सौर ऊर्जा को अधिक टिकाऊ और कुशल बनाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। वैज्ञानिक अनुसंधान 20.6% विद्युत रूपांतरण दक्षता (पीसीई) के साथ अग्रानुक्रम कोशिकाओं और कार्बनिक अर्धचालकों की ओर इशारा करता है, जो सौर सेल अनुप्रयोगों के लिए एक महत्वपूर्ण पैरामीटर है। प्रदर्शन में यह छलांग उस भविष्य के अनुरूप है जहां सौर ऊर्जा स्वच्छ, कुशल ऊर्जा का पावरहाउस बन जाएगी। स्थिरता के लिए भारत के मार्ग में सौर सेल के भीतर

सामग्रियों का संयोजन शामिल है, जो हमें एक हरित और अधिक टिकाऊ भविष्य की ओर ले जाता है।

भारत के पास वैश्विक स्तर पर नवीकरणीय ऊर्जा की चौथी सबसे बड़ी स्थापित क्षमता है और अप्रैल 2000-जून 2023 के बीच प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में \$14,858 मिलियन से अधिक प्राप्त हुआ। केंद्रीय बजट 2023-24 में, ग्रिड, ऑफ-ग्रिड और पीएम-कुसुम परियोजनाओं सहित सौर ऊर्जा क्षेत्र के लिए 7,327 करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे, जो पिछले वर्ष की तुलना में 48% अधिक है।

भारत का सौर ऊर्जा क्षेत्र 7,48,990 मेगावाट की अनुमानित क्षमता के साथ एक सुनहरा अवसर है जिसके दोहन होने की प्रतीक्षा है। रोजगार सृजन से लेकर नवाचार को बढ़ावा देने और बहुत कुछ करने तक, सौर ऊर्जा बाजार भारत के आर्थिक विकास और ऊर्जा परिवर्तन की कुंजी है।

जैसा कि माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 2020 में कहा था, “सौर ऊर्जा न केवल आज बल्कि 21वीं सदी में ऊर्जा जरूरतों का एक प्रमुख माध्यम बनने जा रही है क्योंकि सौर ऊर्जा निश्चित, शुद्ध और सुरक्षित है।”

यह यात्रा सिर्फ टिकाऊ ऊर्जा की ओर नहीं है, बल्कि सूर्य की किरणों से प्रकाशित एक जीवंत और लचीली अर्थव्यवस्था की ओर भी है।





मेरे गाँव की संस्कृति लुप्त होती जा रही है

श्री द्वारिकानाथ महाला

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी
कार्यालय- म.ले.(ले.प II) शाखा कार्यालय पुरी

छोटे बच्चे को कंधे पर बैठाकर, "धो बाया धोन बाया" या "बाई चढ़ेई" गीत गाकर सुलाने की कला विलुप्त होने की कगार पर है। बच्चे अब "इटिकिली मिटिकिली फूटिगला काइंच" जैसे गाने गाकर नहीं खेल रहे हैं। आउटडोर खेल जैसे स्टैंडिंग गेम, नेस्टिंग गेम, गोडीडिया, दाबुलपुआ, और वहीं बच्चों के इनडोर खेल जैसे रस्सी ढियाँ, लड्डू या गोटी खेलना, चूल्हे में चावल-दाल पकाने के खेल अब देखने को नहीं मिलते हैं। बच्चे अब माँ, दादा-दादी, चचेरी बहन, से सुआ और पारंपरिक कहानियाँ-"टुआं-टुइं", "बूढ़ी असुरनी" जैसी बातें नहीं सुनते हैं। अब स्कूल के छात्र पाठ्य पुस्तक में छुपाकर कहानी की पुस्तक नहीं पढ़ते हैं। जैसे-जैसे पीढ़ियाँ बदल रही हैं, हर व्यक्ति मोबाइल और टेलीविजन देखने का आदी हो गया है। गाँव की जीवनशैली एवं संस्कृति में भी ऐसा बदलाव आ गया है।

गाँव में अब नड़ा छप्पर के घर ज्यादा नहीं हैं। अगर कोई छप्पर वाला घर है भी, तो उस पर कढ़ू की लताएँ नहीं दिखतीं। घर के पीछे कोशिला, लेउटिया, धनिया पत्ता, नींबू, मिर्च के पेड़, पोइवाडी की लताएँ भी अब नहीं दिखतीं। गाँव में अब मिट्टी की दीवारें नहीं हैं और न ही उन दीवारों पर रंगोली बनाई जा रही है। अब तो मार्बल और टाइल वाले फर्श पर रंगोली के स्थान पर स्टिकर लगाकर काम चलाया जा रहा है। दरवाजे के ऊपर साँचे की आकृति ओड़िया हस्तकला की पहचान थी, जो अब कम दिखती है।

त्योहारों के मनाने में अब शिथिलता आती जा रही है। त्योहारों को मनाने का उत्साह और खुशी पहले जैसी नहीं रही। लोग अब अपने मोबाइल फोन पर तस्वीरें और वीडियो लेने तक ही सीमित रह गए हैं। चाहे "ज्येष्ठ पुत्र को पुत्रमानांक पोदुयन" पूजने की परंपरा हो या "संवादशमी" पर परिवार के प्रत्येक सदस्य के नाम पर सूर्य देव को कुछ न कुछ अर्पित करने की प्रथा, सब कुछ धीरे-धीरे फीका पड़ रहा है। रज त्योहार है, लेकिन रज पर्व की रजदोली नहीं रही। "कुंवार पूर्णिमा" त्योहार है, लेकिन इस पर्व पर "जान्हिफुल ठोठा" गीत नहीं गाए जा रहे हैं। गाँव की गलियों में रजदोली के लहरा गीत और नदी किनारे के बागुड़ी गीत की ध्वनि अब सुनाई नहीं देती। यह सच है कि हर साल रज त्योहार मनाया जा रहा है, लेकिन अब तेल, साबुन, अलता, खाना-पेय, दावत और खसिकटा

जैसी परंपराओं में पहले जैसा आनंद नहीं रहा। गाँव की सड़कों पर कुंवार पूर्णिमा की पूजा और अंजुलि टेका पूजा के दौरान पालभूत की मजेदार महफिलें भी अब नहीं होती हैं।

कई स्थानों पर सामुदायिक दावतों की परंपरा भी मिटने लगी है। गाँवों में होली पर्व में डोल बीमान उठाने के लिए स्वयंसेवक नहीं मिलते। मंदिर में घंटी बजाने के लिए कोई छोटा बच्चा भी नहीं मिलता इसलिए अब डिजिटल घंटियाँ और मशीनी घड़ियाँ बज रही हैं। आज लोग त्योहारों पर पूर्वजों को याद नहीं कर रहे हैं। पुनरुद्धार और प्रचार-प्रसार के तमाम प्रयासों के बावजूद कई गाँवों से भगत तुंगी का अस्तित्व ही मिटने लगा है। पूरे गाँव के लोगों के शामिल होने से होने वाले सामूहिक अस्तप्रहरी, छब्बीसप्रहरी, भागवत सप्ताह, रामचरित मानस पारायण, ठकुरानी गढ़ुआ, देवी मेला, मुचाबा और मुफ्त यात्राएँ, नाटक, भजन जैसे मनोरंजन कार्यक्रम भी कम हो गए हैं। गाँव की गलियों में पाला, दासकठिया, घोड़ा नाच, चेरहेया-चेरहेयानी गीत और नृत्य, मुंडपोटा केलारा प्रदर्शन अब नहीं देखे जाते हैं। पन संक्रांति झामु यात्रा, गोष्टाष्टमी, रक्षी पूर्णिमा की गौ-पूजा आदि सभी परंपरा धीरे-धीरे लुप्त हो रही हैं।

ओड़िया घरों में उपयोग की जाने वाली दैनिक वस्तुएँ और घरेलू सामान भी अब नहीं दिखते। ओड़िया घरों में ब्याबहरू, तहिस, मसिना, सैप, शिला-शिल्पुआ, शिका, चाकी, चटु, घोरना, जलचटु, खुयादंडा, चटु, विचाना, सबरी, पालिंकी, तेंदा, ओवला, खाला, मेरी, घासी, गुंडा जैसे शब्दों का प्रयोग कम हो गया है। धोती-कुर्ते की जगह शेरवानी और पगड़ी हमारी शादी का जोड़ा बन गई है। विवाह से पहले महाप्रसाद और निर्बंध का स्थान अब रिसेप्शन, रिंग सेरेमनी, प्री-वेडिंग फोटोशूट जैसी परंपराओं ने ले लिया है।

अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते समय जिस तरह हम अनावश्यक रूप से विदेशी शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं, उसी तरह हम अपने देश के खूबसूरत पर्यटन स्थलों को नज़रअंदाज कर विदेशी पर्यटन स्थलों की ओर जा रहे हैं।

यह सूची अधूरी है... लेकिन क्रूर वास्तविकता यह है कि हम अपनी अनदेखी और उपेक्षा की कीमत चुका रहे हैं और भविष्य में भी चुकानी पड़ेगी।



बहता जल

श्री पी श्रीनिवास राव

सहायक पर्यवेक्षक

कार्यालय- महालेखाकार (ले.प II)

पंच तत्व पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु में एक महत्वपूर्ण तत्व जल जिसके बिना अस्तित्व की कल्पना भी असंभव है। जल के बिना जीव-जन्तु पेड़-पौधों मानव का अस्तित्व संभव ही नहीं। यह न केवल हमारे जीवन के लिए अनिवार्य है बल्कि कृषि, उद्योग और पर्यावरण के लिए भी एक महत्वपूर्ण संसाधन है। कुछ निचली कक्षाओं में तो प्रसिद्ध कविता आज भी सिखाई जाती है -

मछली जल की रानी है।

जीवन इसका पानी है।।

‘जल का महत्व’ बाल्यकाल से ही संस्कारों के रूप में बताया दिया जाता है। यदि जल नष्ट करोगे तो घर में लक्ष्मी का वासनहीं होगा। उससे भयंकर सच यह है कि लक्ष्मी चंचल है दूसरे के घर चली जाएगी। अतः जल की बचत करो। बालमन सब कुछ सहन कर सकता है पर यदि अपने घर की संपत्ति पड़ोसी के यहाँ चली जाए तो यह असहनीय है। अतः सहजतया स्वीकारना पड़ता है कि जल नष्ट न करने में ही उसकी भलाई है या कह सकते हैं कि मजबूरी में ही सही हमें जल संरक्षण करना अनिवार्य है।

‘जल ही जीवन है’ ‘जल है तो कल है’ परसों भी है और भविष्य भी है। जल के स्रोत अनेक हैं, किन्तु वर्षा जल मुख्य स्रोत माना जाता है जो किसानों के लिए वरदान है। बारिश पर कही गई एक प्रसिद्ध कविता दिलचस्प है -

हाँ मेरे दोस्त बारिश ! वही बारिश !

जो आसमान से आती है,

बूंदों में गाती है,

पहाड़ों से फिसलती है,

नदियों में चलती है,

नहरों में मचलती है,

खपैरलों पर गिरती है,

गलियों में फिरती है,

मोड़ पर संभलती है।

जैसा कि हम जानते हैं वर्षा का जल सबसे शुद्ध होता है। जो आसमान से धरती को स्पर्श करते ही नीचे स्तर की ओर बहने लगता है। यदि बारिश एक सीमा से अधिक हो जाती है तो बारिश का बहता जल शहरों/गांवों के निचले हिस्सों में भर जाता है और यदि मूसलाधार बारिश घंटों/दिनों तक हो जाए तो यह बहता जल गलियों में फिरने लगे और मोड़ पर न संभले तो नदियों के पाटों को तोड़ता हुआ विकराल रूप धारण कर बाढ़ का रूप धारण कर लेता है। नदी नाले उफान पर आ जाते हैं और कई जगह तो ये नींद नाले पुलों तक को अपने साथ बहा ले जाते हैं।

क्या यह जल का दोष है ?

शायद नहीं, यदि इस बहते हुए जल का संग्रहण/संचयन कर लें तो इस स्थिति से बचा जा सकता है। जल का संग्रहण/संचयन का उद्देश्य वर्षा के जल को बहने से रोकने और उसका उपयोग करने हेतु उसे इकट्ठा करना है।

बहते हुए जल का संग्रहण करने के लिए कई तरीके हैं, जैसे वर्षा जल संचयन (Rainwater Harvesting) और भूमिगत जल रिचार्जिंग (Groundwater Recharge)। वर्षा जल संचयन में बारिश के पानी को छत या अन्य सतहों पर इकट्ठा करके एक टैंक या जलाशय में संग्रहित किया जाता है।

भूमिगत जल रिचार्जिंग में, वर्षा जल को भूमि के अंदर रिसने के लिए गड्ढे, कुएं या अन्य संरचनाएं बनाई जाती हैं।

वर्षा जल संचयन (Rainwater Harvesting) के निम्नलिखित प्रकार हैं :-

1. छत आधारित वर्षा जल संचयन : इसमें छत से बहते हुए जल को नालियों के माध्यम से इकट्ठा करके एक टैंक या जलाशय में संगृहीत किया जाता है।
2. भूमि आधारित वर्षा जल संचयन : इसमें बहते हुए वर्षा जल को भूमि में रिसने नालियों के माध्यम से इकट्ठा

करके एक टैंक या जलाशय में संगृहीत किया जाता है ।

3. भूमिगत जल रिचार्जिंग (Groundwater Recharge) के प्रकार निम्नलिखित हैं:-
4. रिचार्ज पिट : इसमें बहते हुए जल को भूमि में रिसने के लिए गड्ढे बनाए जाते हैं ।
5. कुएं और नलकूप : ये भी वर्षा के जल को भूमि के अंदर रिसने और एकत्रित किये जाने के लिए उपयोग में लाए जाते हैं ।

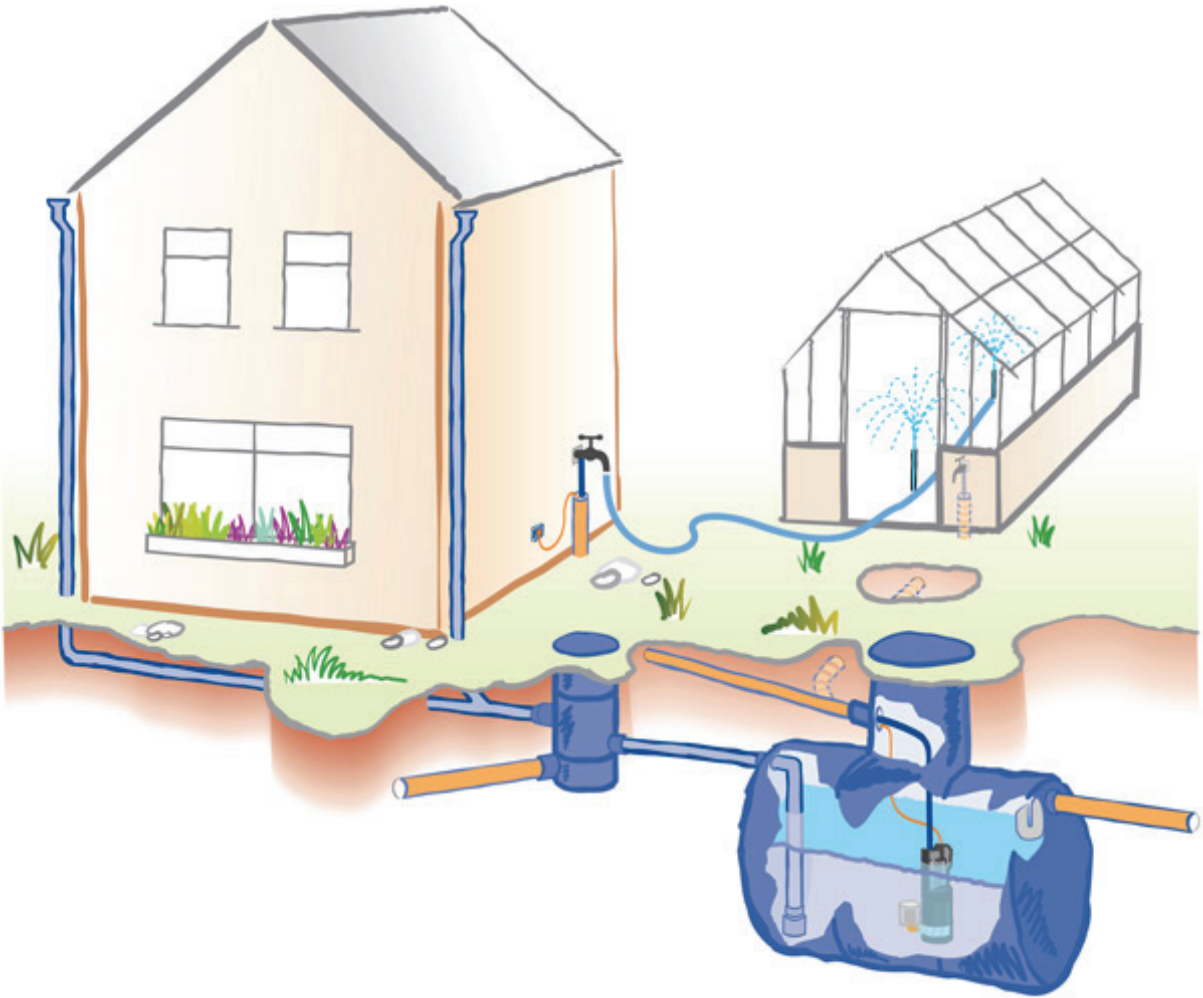
बहते हुए जल के संचयन हेतु अन्य तरीके :-

1. तालाब व झीलें :- ये वर्षा जल को इकट्ठा करने के परंपरागत उपाय हैं ।
2. बांध :- नदियों और नालों पर बांध बनाए जा सकते हैं ।

जिससे बहते हुए जल को रोककर रखा जा सकता है ।

जलागम क्षेत्रों में वृक्षारोपण और अन्य उपायों से भी वर्षा जल को भूमि में रिसने में मदद मिलती है । इसके लिए हमें अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने चाहिए ।

इस प्रकार बारिश के रूप में हमें मिलने वाले इस ईश्वरीय प्रसाद का संरक्षण सभी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए आवश्यक है । सतह से बारिश के पानी को इकट्ठा करना बहुत असरदार और पारंपरिक है । हम राष्ट्रीय स्तर के साथ व्यक्तिगत स्तर पर कदम उठा सकते हैं । उपर्युक्त तरीकों से न केवल हम वर्षा के बहते हुए जल को संग्रहित कर उपयोग में ला सकते हैं बल्कि बहते हुए जल को बाढ़ के रूप में रौद्र रूप धारण करने से भी रोका जा सकता है ।





और यहीं से शुरू होती हैं कहानी

श्री अयन बेरा

व.ले.प./फा – II अनुभाग

कार्यालय-महालेखाकार (ले.प II), शाखा कार्यालय पुरी

"मैम, कृपया समझने की कोशिश करें। पैसे ऐसे वापस नहीं मिल सकते।"

अभिजीत उत्तेजित आवाज को शांत करने की कोशिश करता है।

"मैं कुछ भी सुनना नहीं चाहती हूँ। मुझे अभी पैसा वापस देना होगा।" दूसरी तरफ से जवाब आता है।

कभी-कभी ऐसा दिन भी आता है जब अभिजीत के लिए कुछ भी ठीक नहीं होता। आज एक ऐसा ही दिन है।

खैर, चलिए आरम्भ करते हैं। ऑफिस के लिए निकलने वाली पहली ट्रेन मिस हो गयी। फिर दूसरी ट्रेन भी दमदम बेलघरिया के बीच करीब एक घंटे तक खड़ी रही। अभिजीत समझ गया कि आज उसे ऑफिस में देर हो जाएगी और मैनेजर का ताना देना अनिवार्य था। अभिजीत ने अपने मैनेजर को फोन लगाया।

"संजीव दा, आज देर हो जायेगी।"

"क्यों? अच्छा, क्या तुम लोगों को मुझ पर थोड़ी सी भी दया नहीं आती?"

कल से ही टीम में एक मेम्बर एबसेंट है और फोन बंद करके बैठा है। सुपरवाइजर भी नाराज हो रहा है। अब तुम फिर कह रहे हो कि तुमको भी देर हो जायेगी। भाई, मेरी नौकरी लोके क्या?

मैनेजर संजीव के साथ यही समस्या है। समस्या को समझना ही नहीं चाहता है।

हालांकि, अभिजीत करीब डेढ़ घंटे देर से ऑफिस में दाखिल हुआ और चुपचाप फोन करने लगा। कौन जानता था कि दिन की तीसरी कॉल में ही ऐसी मोहतरमा से पाला पड़ेगा।

मैडम ने कोलकाता से फोन किया। उनका दावा है कि वोडाफोन कंपनी ने जानबूझकर उनके फोन का बैलेंस काट लिया है। उसे अभी पैसे लौटाने होंगे। इस उत्तेजित बातचीत के दौरान अभिजीत ने फिर कहना शुरू किया,

"मैम, कृपया मेरी बात सुनें। मैंने विवरण की जांच की और देखा कि आपकी फोन पर जीपीआरएस (जनरल पैकेट रेडियो सेवा, फोन पर इंटरनेट सुविधा की सबसे पुरानी प्रणाली) सक्रिय है और इसके साथ सर्फिंग भी किया गया है।

मैडम, मैं आपको पूरी सर्फिंग हिस्ट्री बता सकता हूँ। कंपनी ने कहीं भी गलत तरीके से पैसे नहीं काटे हैं।

"आप सब चोर है। कंपनी ऐसे पैसा चुराके उस चोरी की गयी पैसों से आप लोगों को तनख्वाह देती है। क्या आपको ऐसी कंपनी में काम करने में शर्म नहीं आती?"

"मैम, आप गलत बोल रहीं हैं। मैं दोबारा कहता हूँ कि कंपनी ने कहीं भी गलत तरीके से पैसे नहीं काटे हैं।"

"मैं यह नहीं सुनना चाहती। मुझे अपना पैसा वापस चाहिए।"

अभिजीत का टॉकटाइम ओलरेडी 5 मिनट से 6 मिनट हो गया है। टीम लीडर ने पीछे से चिल्लाना शुरू कर दिया -

"अरे, क्या बात है? इस एक कॉल में पूरा दिन बिताओगे क्या?"

नाराज अभिजीत ने अब कहा-

"मैम, मुझे आपसे और कुछ नहीं कहना है। कृपया फोन रख दें और यदि आप हमारे मैनेजर से बात करना चाहें तो मैं लाइन ट्रांसफर कर दूंगा।"

"चोर कहीं के। अगर मुझे अभी मेरे पैसे वापस नहीं मिले, तो मैं श्राप देता हूँ कि आपकी माँ आज ही मर जाए।"

अभिजीत को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके कानों में गर्म सीसा डाल दिया हो। गुस्से में उसका चेहरा लाल हो गया। अपनी नोटबुक में उस नंबर को नोट किया और फोन ट्रांसफर कर दिया मैनेजर को। "मैं इससे बाद में निपटूंगा", उसने खुद से कहा।

शाम को ऑफिस से लौटने के बाद अभिजीत चाय लेकर बालकनी में बैठा था। उसे घर में यह जगह बहुत पसंद है।

अभिजीत को अचानक माँ की आवाज सुनाई दिया। वो बालकनी से चिल्लाया,

"क्या हुआ माँ?"

"यहाँ आ। जल्दी।"

माँ पेंट धोने जा रही थी, इसलिए उन्होंने जेब की जाँच की और उसमें कुछ पैसे और सुबह का वो फ़ोन नंबर मिला। उसे देने के लिए बुलाया गया था। नंबर देखकर अभिजीत का दिमाग फिर गर्म हो गया।

अभिजीत ने पैसे बटुए में रखे और उस नंबर को लेके फिर बालकनी में वापस आया। उसने कुछ देर सोचा और उस नंबर पर कॉल किया। फोन की घंटी बजी। एक बार, फिर दो बार...

अभिजीत साल्ट लेक सिटी सेंटर में सीसीडी के आउटलेट के सामने बैठा था। शाम 5 बजे मिलने की बात थी। इसी के तहत अभिजीत यहां आया। आज उसकी नाईट शिफ्ट है। यहाँ काम खत्म करके ऑफिस जाएगा। साढ़े पांच बजे उसके मोबाइल पर फोन आया।

"हैलो, अभिजीत, आप कहाँ हैं?"

"जहां होना चाहिए था। नीली जींस और सफेद शर्ट।"

"हाँ, हाँ, मैं आपको देख सकती हूँ।"

लड़की अभिजीत के पास आकर बैठ गयी। अभिजीत ने सोचा था लड़की बहुत ही स्टाइलिश होगी। क्योंकि उसको यहां इस शॉपिंग मॉल में मिलने बुलाया है। लेकिन अभिजीत को निराश करते हुये लड़की बहुत ही साधारण निकली। कपड़े भी इस बात का संकेत दे रहे हैं। जींस और कुर्ती। लेकिन लड़की के चेहरे पर एक सुंदरता है। खासकर मुस्कान बहुत खूबसूरत है। अभिजीत सोचा था जब आमने सामने होंगे तब एक गुस्सावाला लुक देंगे। लेकिन लड़की को देख कर सबकुछ भूल गया।

"सॉरी, मुझे आने में थोड़ी देर हो गयी।" मुस्कुराते हुये लड़की ने कहा।

"ठीक है। बताइए आपने मुझे फोन करके यहाँ क्यों बुलाया?"

"हाँ, माफी मांगने के लिए। मुझे क्षमा करें। मुझे कल आपसे ऐसा नहीं कहना चाहिए था। मैं कल थोड़ा परेशान था।"

फ़ोन पर पैसे तो ऐसे ही कट गए, कुछ जरूरी कॉल भी करनी थी। मैं अपने आप को रोक नहीं सकी। बहुत उल्टा सीधा बोल दिया। दूसरी बार कस्टमर केयर में फोन करती तो आपको पाना मुश्किल था। इसलिए कल जब आप फोन किए तो सोचा की आमने सामने बात करके माफी मांग लूँगी।"

"तो आपको पता था मैं आपको फोन करूँगा?"

अभिजीत ने पूछा।

"हाँ, कोई भी इंसान आपके जगह होता तो वो जरूर कॉल करता और मुझे उल्टा सीधा बोलता। थैंक गॉड, आपने अभी तक कुछ बोला नहीं मुझे।"

"ठीक है। आपकी माफी स्वीकार किया जाता है। कॉफी लीजिए।"

"हाँ। लेकिन यह कॉफी मेरी तरफ से। कृपया मना मत कीजिये।"

"ठीक है, ठीक है।"

कॉफी पीते-पीते उन्होंने कुछ और बेतरतीब बातें कीं और अपने-अपने गंतव्य की ओर चल दिये। हालाँकि, अभिजीत ने लड़की से पूछा कि क्या वह उसे ऑटो में छोड़ देगा। लेकिन दूसरी तरफ से कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिलने पर अभिजीत थोड़ी सा निराश हुआ और वह ऑफिस की ओर चल दिया।

अगले दिन अभिजीत की छुट्टी थी। कल पूरी रात काम करने के बाद सुबह जल्दी घर लौटा था और सो गया था। ग्यारह बजे अभिजीत की भाभीजी ने चाय लेकर न बुलाती तो शायद कुछ देर और सो जाता।

चाय पीकर बाथरूम से तरोताजा होकर निकला तो अभिजीत ने अपने फोन की घंटी सुनी। नंबर देखकर अभिजीत थोड़ा मुस्कुराया। उसे पता था कि फोन आएगा।

अभिजीत फोन उठाया और कहा,

"हैलो।"

"हैलो, अभिजीत। कल आपके साथ शॉपिंग मॉल में मिली थी। आपको कुछ बताना था।"

"मुझे पता है आप क्या बोलने वाली हैं।"

"आप...आप जानते हैं?" दूसरी ओर से अविश्वासपूर्ण प्रश्न आये।

"कल आप किसी और के लिए प्रॉक्सी देने आए थे, यही कहने के लिए कॉल किया है ना?"

"लेकिन आपको कैसे पता चला? मैंने तो कल आपको कोई संकेत नहीं दिया था।"

"बहुत अच्छा सवाल है। तो चलिए आपकी शंका दूर कर देते हैं।"

सबसे पहले, जिस लड़की ने उस दिन कस्टमर केयर में कॉल किया था उसका "श" और "स" का मिश्रित उच्चारण था। आपकी बिलकुल ठीक हैं और दूसरी बात, जब आप कल कॉफी की बिल दे रहीं थीं, तो मुझे आपके ऑफिस आई कार्ड की एक

झलक दिखाई दी। आपका नाम, तस्वीर और फ़ोन नंबर के अंतिम चार अंक दिखाई दिए।

मुझे तुरंत पता चल गया कि आप कोई और हो। लेकिन मुझे समझ नहीं आया कि आपने ऐसा क्यों किया। ”

"बाप रे! आपकी आंखें और कान तो जानलेवा हैं। "

"मैं एक कॉल सेंटर में काम करता हूं। मुझे एक ही समय में सुनना, देखना और कंप्यूटर पर टाइप करना होता है। अगर मेरे पास थोड़ा और समय होता, तो मैं आपका पूरा नंबर देख सकता था। "

और फिर मैं आपको आज फोन करता। लेकिन मुझे लग रहा था कि आप कॉल कर सकते हैं। एनी ओये, क्या अब आप मुझे बताएंगी कि आपने ऐसा क्यों किया?"

शालिनी मेरी रूममेट है। हम दोनों करुणामयी के पास एक लेडिज हॉस्टल में एक ही कमरे में रहते हैं। जब उसने उस दिन कस्टमर केयर पर कॉल किया तो मैं उसके पास ही थी। उसे इस तरह बात करते देख कर मैंने उसे इशारा किया कि वो ऐसी बात न करे। वह थोड़ा गुस्सैल किस्म की है।

गुस्सा आने पर उसके मुंह में जो आता है वो बोल देती हैं। जिस तरह से उसने बात की, कोई भी गुस्सा हो जाता और बाद में फोन करके जरूर कुछ कहता। आपने भी इसीलिए उसे उस शाम फोन किया था। उस दिन जब आपने फोन किया था तब वह बाथरूम में थी। उसका फोन मेरे पास था।

पहले दो बार मैंने फोन नहीं उठाया। तीसरी बार जब रिंग हुआ तो ऐसा लगा कि किसी ने आपातकालीन स्थिति में फोन किया होगा। फोन उठाने के बाद मुझे तुरंत मामला समझ आ गया क्योंकि आपने कहा था कि आप वोडाफोन कस्टमर केयर से बोल रहे हैं।

इसलिए आपको जल्दी रोकने के लिए मैं आपको सीढ़ियों के सामने आने के लिए बोल दी।

मुझे लगा कि शालिनी ये सब सुनने के बाद आने को तैयार हो जायेगी। आखिर उसने गलतियाँ की हैं। अगर आप गुस्से में हैं तो भी ऐसा कुछ कहना ठीक नहीं है। लेकिन बाथरूम से बाहर आ कर वो सब कुछ सुनने के बाद बोली कि मैंने वादा किया है तो मुझे जाना होगा।

और वह किसी भी बात के लिए सॉरी नहीं बोलेगी। अगर सॉरी बोलना हैं तो मुझे ही जाना होगा। उसने आपसे संपर्क करने के लिए अपना फ़ोन दिया था। इसलिए कल मैं उसका फोन लेकर गयी थी। "

"समझ गया। लेकिन अगर आप नहीं आती तो कोई कुछ नहीं कहता। "

"हाँ, आप सही कह रहे हैं। इससे किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन मैं अपनी नजरों में गिर जाती। मैं जानता हूँ कि अगर कोई वादा नहीं निभाता तो कितना बुरा लगता है। "

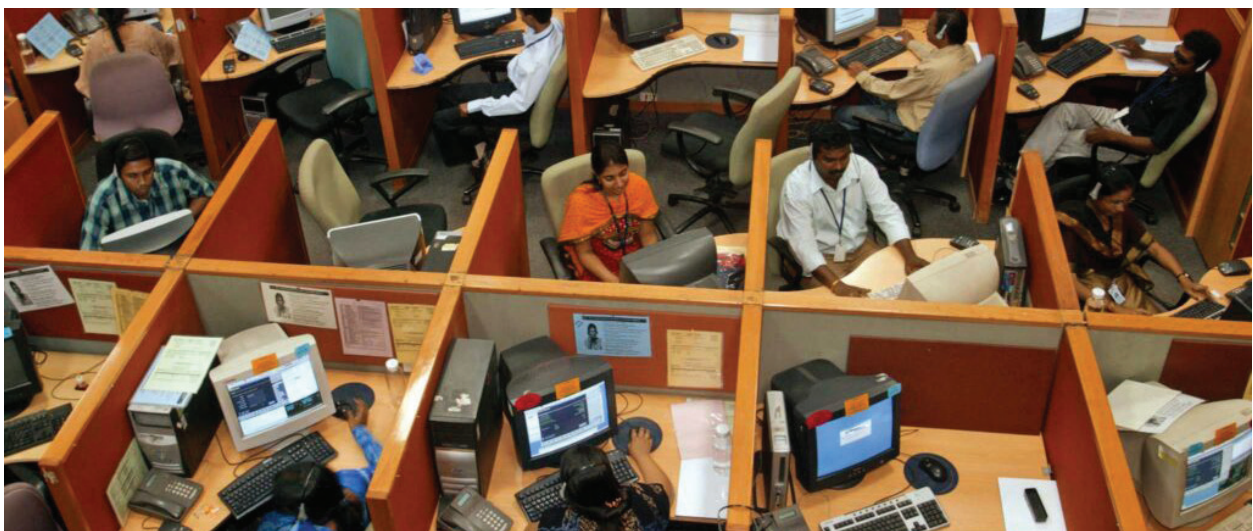
दोनों कुछ देर चुप रहते हैं। फिर दूसरा छोर चुप्पी तोड़ता है, "हैलो, अभिजीत, क्या आप लाइन पर हैं?"

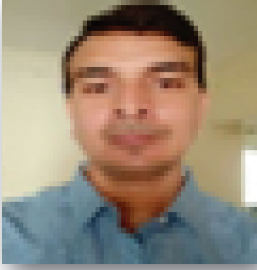
"हाँ, मैं हूँ, मैं हूँ। " अभिजीत ने झट से कहा।

"सुनिश्च, मुझे सचमुच में बहुत खेद है। कृपया मुझे गलत मत समझिए। "

अभिजीत थोड़ा मुस्कराये और बोले,

"एक शर्त पर मैडम, आपको मेरे साथ कॉफी पीनी होगी, उसी जगह पर और इस बार बिल मैं चुकाऊंगा। "





कितना बदल गया ज़माना

श्री मनीष कुमार

वरिष्ठ लेखा परीक्षक

ले प प्र स-II, पुरी

बढ़िया थी गाँव की पगडंडी अपनी,
शहर की सड़कों पर भीड़ बहुत है।

दौड़ता है हर कोई वक्त के पीछे,
पर अपनों के लिए फुर्सत बहुत कम है।

नहीं रही ज़रूरत अब बुजुर्गों की,
हर बच्चा समझदार और अक्लमंद बहुत है।

हरियाली ढूँढे अब गमलों में लोग,
बाग-बगीचे भी अब बीते कल का हिस्सा हैं।

खेतों की मिट्टी की सौंधी खुशबू
अब सिर्फ कहानियों में बसती है।
साँझ की चौपालों की रौनक,
अब मोबाइल की स्क्रीन में सिमटती है।

दूध-दही नहीं खाते अब शहर के लोग,
कहते हैं, इसमें मिलावट बहुत है।
शराब के जाम चढ़ाते हैं शौक से,
फिर कहते हैं, इसमें आराम बहुत है।

कितना बदल गया आज का ज़माना
बंद हो गई चिट्ठी और तार का फ़साना।
वो खत जो लाते थे अपनेपन की महक,
अब गुम है डिजिटल दौर के तहख़ाने में।

आज लोग व्यस्त हैं इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, फेसबुक और व्हाट्सएप
पर,
फिर भी नहीं पता एक-दूसरे का ठिकाना।
दिल की बातें थीं जो कभी कागज़ पर उतरती,
अब बस इमोजी बनकर रह गई हैं दीवाना।

वो मुनिया का खत, वो तार की टन-टन,
जहाँ हर शब्द में छिपा होता था अपनापन।
अब स्क्रीन पर दिखते हैं चैट के बुलबुले,
पर दिलों में वो पहले सा असर नहीं जमाना।

कितना बदल गया ये आज का ज़माना,
जहाँ न पास है वक्त, न जज़्बातों का खजाना।
चलो कुछ पल लौटें उस पुराने दौर में,
जहाँ इंसान ही था इंसान के करीब, बिना बहाना।



यही हमारी कहानी है

श्री अजय साव, कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय-महालेखाकार (ले.प II),

शाखा कार्यालय, पुरी

माँ कोई शब्द नहीं, माँ तो खुद में शब्दों की जननी है,
 माँ बिना ये जगत अधूरा, इसके बिना हर कहानी विरानी है।
 माँ ही तो वह वजह है जिससे दुनिया में रोशनी और रूमानी है,
 अगर न होती ये दुनिया में, तो जीवन अधूरा और वीरानी है।
 माँ की गोद में गुजरा हर पल, सुखद और बहुत सुहावना है,
 उसकी ममता की छाँव तले, हर गम भी लगता बहाना है।
 वो स्नेह की मूरत, करुणा की गंगा, जिसमें समाया है संसार,
 उसके आँचल के साए तले, मिलता है हर दर्द का उपचार।
 स्वयं जगत के पालनहार, श्री कृष्ण यशोदा के आँगन में प्रेम बरसाते हैं,
 माँ की झिड़की भी, हँसकर अपनाते हैं।
 बंसी की तान पर, मोहित है संसार,
 पर माँ के बिना अधूरा, उनका सारा प्यार।
 माँ के आँचल में, हर सुख समाया,
 यशोदा के प्यार ने, ईश्वर को भी बहलाया।
 भले ही वह ब्रह्मांड के स्वामी कहलाते,
 पर माँ के बिना, वो भी अधूरे नज़र आते।
 माँ की दुआओं का साया, हर राह को आसान करता है,
 उसकी मुस्कान से ही जीवन, खुशियों की पहचान करता है।
 माँ के बिना ये जग अधूरा, वो ममता की अमर निशानी है,
 माँ से ही जग रचा गया और यही हमारी कहानी है।





ज़िन्दगी

श्री आनंद सिंह कोस्टा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

ज़िन्दगी भी अजीब खेल दिखाती रही,
जिसे न चाहा,
उसी से मुसलसल रूबरू कराती रही।
ज़ख्म तो बहुत से दिये ज़िन्दगी ने,
पर हर बार कुछ नया सिखाती रही ॥

दिल की चाहत को कभी मिलने न दिया,
पर होठों पे न जाने कहाँ से,
एक मुस्कान सी लाती रही।
दिया हौसला मुश्किलों से लड़ने का,
मन में आशा की किरण जगाती रही।
गिराकर, उठाकर, रुलाकर, हँसाकर,
न जाने कितने एहसास कराकर,
एक अच्छा इंसान बनाती रही ॥

कभी हमसे रूठती रही, कभी हमको मनाती रही,
ज़िन्दगी भी अजीब राह दिखाती रही।
कभी डांट से, कभी प्यार से सहलाते हुए,
न जाने जीवन के कितने पाठ पढ़ाती रही।
कभी गम के, कभी खुशी के,
आँखों से आंसू छलकाती रही।
ज़िन्दगी भी अजीब खेल दिखाती रही।
पर हर बार कुछ नया सिखाती रही ॥

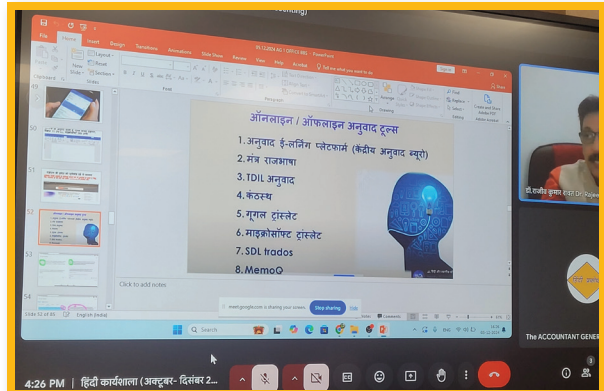


विकास या विनाश

श्री आयुष्मान वर्मा

पुत्र श्री राहुल कुमार वर्मा (क.अनुवादक)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

पेड़ से प्राणवायु नहीं फर्नीचर की लकड़ी चाहिए,
नदी से पानी नहीं रेत चाहिए,
पहाड़ से औषधि नहीं पत्थर चाहिए,
खेत से शुद्ध अन्न नहीं नकदी फसल चाहिए।
उलीच ली रेत, खोद लिए पत्थर,
काट लिए पेड़, भर ली जेब,
रेत से पक्की सड़क, पत्थर से मकान बनाकर,
लकड़ी से नक्काशीदार दरवाजे और महंगे फर्नीचर से घर सजाकर,
अब भटक रहे हैं सूखे कुओं में झांकते,
रीती नदिया तांकते।
लू के थपेड़ों में पेड़ की ठंडी छाव खोजते
बिना छाया के ही हो जाती है सुबह से शाम
और लोग दूढ़ रहे हैं ऑक्सीजन तमाम,
हे स्वार्थी मनुष्य तू किस ओर जा रहा है,
ला रहा है तू विकास या विनाश।



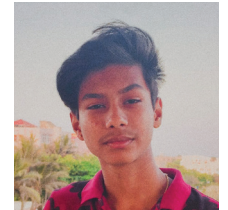


सुश्री थिरसरिया नायक

पुत्री : श्री खुशीराम नायक,

(स.लेप.अ.)

कार्यालय-महालेखाकार
(ले.प II), शाखा कार्यालय, पुरी



श्री जगजीत राय

पुत्र श्रीमती कविता राय

(सहायक पर्यवेक्षक)

कार्यालय-महालेखाकार (ले.प II),
शाखा कार्यालय, पुरी

